RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जुलाई 2021

बाल विज्ञान पत्रिका, जुलाई 2021

चकमक

मूल्य ₹50

अलविदा सुन्दरलाल बहुगुणा

1970 के दशक की बात है। सरकार ने उत्तराखण्ड में जंगल के जंगल नीलाम कर दिए थे। कई लोगों ने इसका विरोध किया। फिर भी ठेकेदार पेड़ों को काटने पहुँच गए। जैसे ही वे किसी पेड़ को काटने आगे बढ़ते गाँव वाले उससे चिपक जाते। यही ‘चिपको आन्दोलन’ का आगाज़ था। एक व्यक्ति जिनका नाम लिए बिना चिपको आन्दोलन की बात पूरी नहीं हो सकती, वह हैं ‘सुन्दरलाल बहुगुणा’।

अंक 418 ● जुलाई 2021
चकमक

इस बार

अलविदा सुन्दरलाल बहुगुणा – 2
पेड़ तुम दर्ज़ी – सुशील शुक्ल – 4
बड़ों का बचपन – तोहफा – कविता तिवारी – 6
क्यों-क्यों – 9
नन्हा राजकुमार – एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी – 12
तटरेखा को नापना – उमा सुधीर – 16
तालाबन्दी में बचपन – कटे खेतों में बीनना – उमेश कुमार सिंह – 19
फफूँद – नेचर कॉन्ज़र्वेशन फाउंडेशन – 22
जो मैं हूँ – बेंजामिन ज़िरू – 24
मैं भी वहाँ था... – रुद्राशीष चक्रवर्ती – 26
माथापच्ची – 29
गणित है मज़ेदार – पास्कल त्रिकोण – आलोका कन्हेरे – 30
मेरा पन्ना – 32
तुम भी जानो – 39
चित्रपहेली – 40
भूलभुलैया – 43

https://en.wikipedia.org/wiki/Chipko_movement#/media/File:Big_chipko_movement_1522047126.jpg

1950 के दशक से पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों पर काम करते आ रहे सुन्दरलाल बहुगुणा ने शराबबन्दी के लिए और टिहरी बाँध के खिलाफ भी आन्दोलन किए। हिमालय की इकोलोजी की उनको गहरी समझ थी। और हिमालय के पर्यावरण को जो खतरे थे उनके बारे में लोगों को जागरूक करने वे देश-विदेश में घूमे। उन्होंने श्रीनगर से कोहिमा तक 4800 किलोमीटर की पैदल यात्रा भी की।

पिछले महीने 94 साल की उम्र में वह कोरोना की वजह से इस दुनिया से चले गए और अपने पीछे छोड़ गए, एक गूँज। वही गूँज! जिससे आने वाली पीढ़ी जंगलों को बचाने के लिए अपनी आवाज़ बुलन्द करती रहेगी...

सम्पादन
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सहायक सम्पादक
मुदित श्रीवास्तव
भाविनी पन्त

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

आवरण चित्र: एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 3 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

पेड़ तुम दर्ज़ी

सुशील शुक्ल

चित्र: कनक शशि

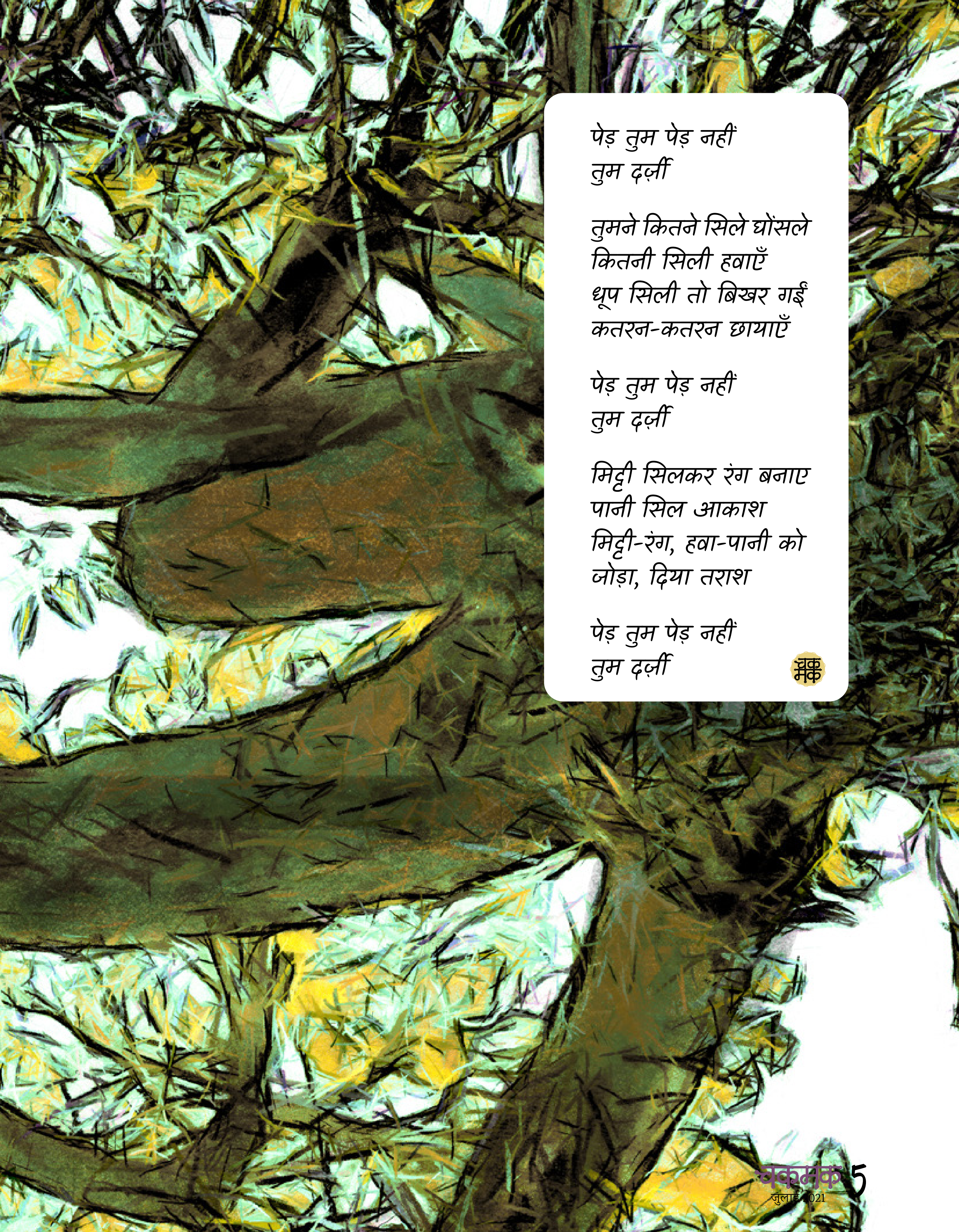

पेड़ तुम पेड़ नहीं
तुम दर्ज़ी

तुमने कितने सिले घोंसले
कितनी सिली हवाएँ
धूप सिली तो बिखर गईं
कतरन-कतरन छायाएँ

पेड़ तुम पेड़ नहीं
तुम दर्ज़ी

मिट्टी सिलकर रंग बनाए
पानी सिल आकाश
मिट्टी-रंग, हवा-पानी को
जोड़ा, दिया तराश

पेड़ तुम पेड़ नहीं
तुम दर्ज़ी

तोहफा

कविता तिवारी

चित्र: कनक शशि

नए स्कूल में आए अभी कुछ ही दिन हुए थे। मैंने और मेरी कुछ सहेलियों ने साथ ही में इस स्कूल में एडमिशन लिया था। इसलिए हमारा एक बना-बनाया ग्रुप था। हम ज़्यादातर साथ ही रहते। और उस स्कूल में पहले से पढ़ रहे दूसरे बच्चों से बहुत ज़्यादा मतलब नहीं रखते थे। खासकर लड़कियों के एक ग्रुप से हमारी कुछ खास बनती नहीं थी। इसकी एक वजह मॉनिटर के लिए मुझे चुना जाना भी था।

हमारी क्लास में लड़कियों की ही तरह लड़कों के भी अलग-अलग ग्रुप थे। क्लास में एक तरफ की बैंच में लड़के और दूसरी तरफ की बैंच में लड़कियाँ बैठा करती थीं। मैं थोड़ा आगे की बैंच में बैठा करती थी। और वो सबसे पीछे की बैंच में। मेरे ठीक पीछे की बैंच में मेरी सहेलियाँ ही बैठतीं। उनसे बात करने/पूछने के बहाने मैं कई बार पलटती और चुपके-से एक नज़र उसे भी देख लेती। उसके लिए भी लास्ट की बैंच पर बैठकर मुझे ताकना आसान होता। पर हम कभी एक-दूसरे से बात नहीं करते।

ऐसे ही ऐसे तकरीबन तीन-चार महीने बीत गए। फिर 26 जनवरी के उपलक्ष्य में अलग-अलग स्कूलों की खेल प्रतियोगिता होनी थी। हमारी क्लास से मैं और मेरे साथ की तीन और लड़कियाँ खो-खो की टीम में थीं। प्रतियोगिता के एक दिन पहले यह तय हुआ था कि कल खेल में भाग लेने वाले सभी बच्चे रंगीन ड्रैस में स्कूल आएँगे ताकि स्कूल यूनिफार्म को धोकर प्रतियोगिता के दिन के लिए तैयार रखा जा सके। फिर पता नहीं क्या हुआ कि बाकी की दोनों लड़कियाँ तो

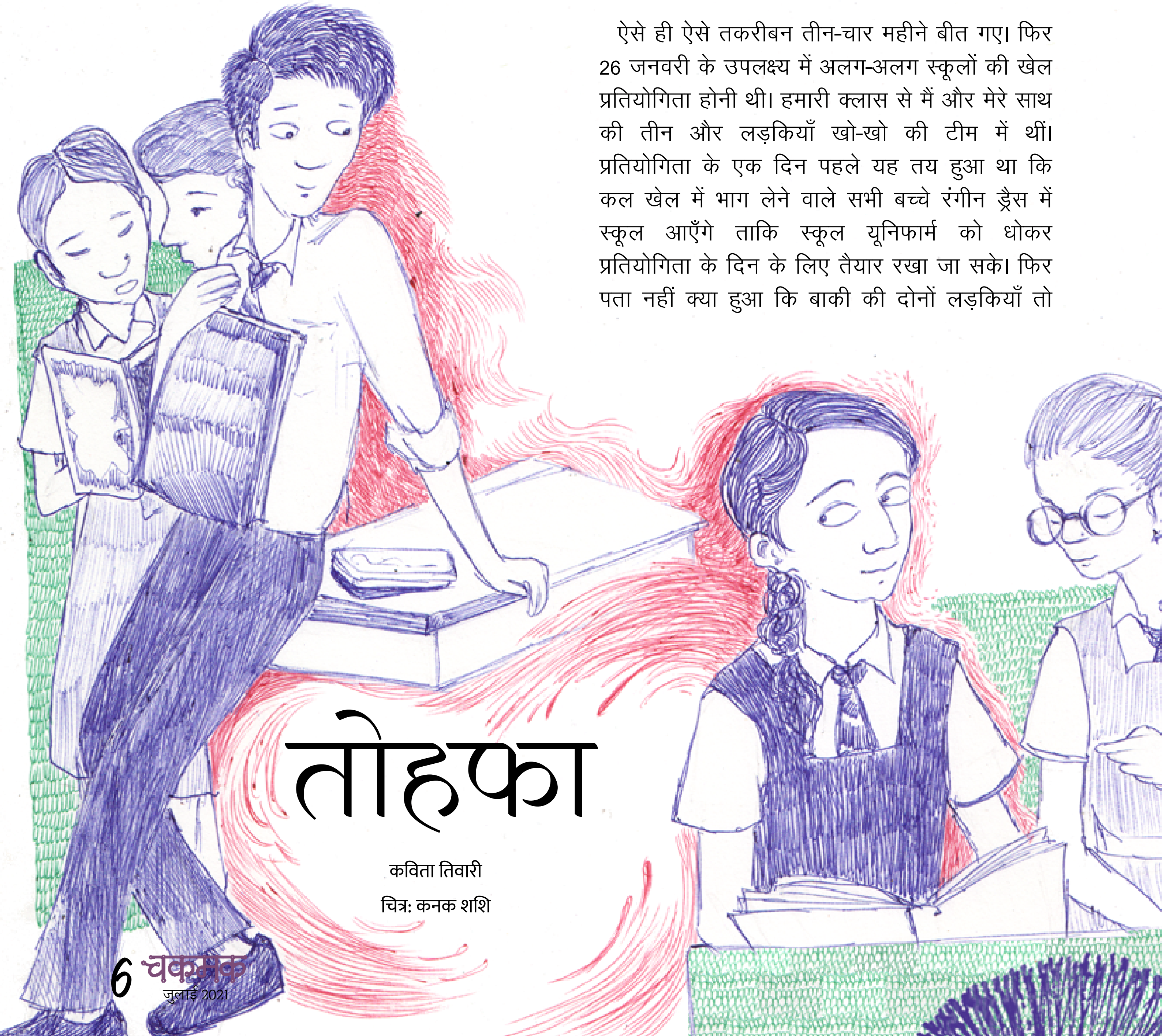

स्कूल यूनिफार्म पहनकर आईं। पर मैं उस दिन कलर ड्रैस में स्कूल आ गई। उस पूरा दिन उसकी नज़रें बार-बार मुझ पर ही आ टिकतीं। शायद इसका कारण यह था कि पहली बार उसने मुझे स्कूल यूनिफार्म से अलग किसी ड्रैस में देखा था। उसकी आँखों की वो चमक मुझे आज भी याद है।

खैर, पहले दिन की प्रतियोगिता में हमारी टीम जीत गई थी। सभी लोग हमें चियर करने आए थे। वो भी। पर हमेशा की तरह बोला कुछ नहीं। अगले दिन के खेल के दौरान मेरे पैर में एक काँच लग गया। इस वजह से मुझे खेल छोड़ना पड़ा। अगले दो दिन मैं स्कूल भी नहीं गई। फिर एक शाम मेरे घर के लैंडलाइन पर एक फोन आया। इत्तेफाक से वो फोन मैंने ही उठाया। पर दूसरी ओर से कोई आवाज़ नहीं आई। पाँच मिनट बाद फिर फोन आया। धीमी-सी आवाज़ में किसी ने पूछा, “कैसी हो?” मैंने कहा, “ठीक हूँ।” कौन बोल रहा है?” इतना कहने के साथ ही फोन कट गया। दिल धक-से होकर रह गया। आवाज़ तो सुनी-सुनी लग रही थी। पर यकीन भी नहीं हो रहा था कि मैं सही समझ रही हूँ।

फिर मैंने अपनी एक सहेली जिसकी उससे बात होती थी उसको यह सब बताया। दो-तीन दिन बाद जब मैं स्कूल गई तो उसने लंच टाइम में मेरी और उसकी एक मीटिंग फिक्स करा दी। लंच टाइम में इसलिए कि तब ज़्यादातर सभी बच्चे इधर-उधर हो जाते और क्लास में शायद ही कोई रहता। तो बात करना आसान होता। उस समय दिल इतना ज़ोरों-से धड़क रहा था कि लगता था कि मुँह खोलते ही उछलकर बाहर आ जाएगा। फिर भी मैंने ही बात शुरू की। और पूछा, “तुमने फोन किया था?” वो बोला, “हाँ।” मैंने कहा, “क्लास में तो बात नहीं करते। फिर फोन क्यों किया था।” उसने कुछ हिचकिचाते हुए कहा, “तुम्हारे पैर में चोट लग गई थी ना, तो हालचाल जानने के लिए।” इस तरह हमारी दोस्ती की शुरुआत हुई। सबके सामने तो हम अभी भी बात नहीं करते। पर कॉपी लेने-देने के बहाने चिट्ठियों की अदला-बदली होने लगी। और जब भी मौका मिलता लंच टाइम में बात करने से हम ज़रा भी ना चूकते।

मेरे और उसके कुछ करीबी दोस्तों को हमारी दोस्ती के बारे में पता था। और धीरे-धीरे दूसरे ग्रुप की कुछ लड़कियों को भी इसकी भनक लगने लगी थी। फिर मेरे जन्मदिन पर उसने मुझे एक ‘विंड चाइम्स’ तोहफे में दी। यह बात क्लास में किसी से नहीं छिप पाई।

तोहफा पाकर मैं खुश तो बहुत थी। पर इस तोहफे की वजह से मेरे सामने दो समस्याएँ खड़ी हो गई थीं। पहली तो यह कि तोहफे को घर ले जाती तो क्या कहती घरवालों से कि किसने दिया है। मेरी सभी सहेलियों को घरवाले अच्छी तरह जानते थे। और यह भी जानते थे कि उनमें से कोई भी मुझे इतना महँगा तोहफा नहीं देगा।

और दूसरी ये कि दूसरे ग्रुप की कुछ लड़कियों को उसका मुझे तोहफा देना और मेरा ले लेना रास नहीं आया था। वे इस बात पर अड़ी थीं कि इसकी शिकायत प्रिंसिपल सर से करेंगी। ये ज़्यादा बड़ी मुश्किल थी। क्योंकि अगर बात प्रिंसिपल सर तक जाती तो वह मम्मी-पापा को बुलवाते। और तब किसी भी सूरत में घरवालों से यह बात छिपाना मुमकिन नहीं होता। इस बात को लेकर उससे भी झगड़ा हो गया कि स्कूल में तोहफा देने की ज़रूरत ही क्या थी। पर यह भी था कि स्कूल के अलावा तो मिलने का कोई ज़रिया था ही नहीं।

तोहफा मैंने अपनी एक सहेली को दे दिया। सोचा कुछ दिनों बाद इसको ले जाऊँगी तो घर पर किसी को जन्मदिन के तोहफे का अन्देशा भी नहीं होगा। और तब तक हम इसके लिए कोई कहानी भी बना लेंगे। कहानी भी क्या खूब बनी। दूसरे ग्रुप की जो लड़की मॉनिटर बनना चाहती थी मैंने उसके सामने यह डील रखी कि अगर वो यह बात प्रिंसिपल सर को नहीं बताएगी तो मैं कुछ भी बहाना बनाकर मॉनिटर का पद छोड़ दूँगी। और फिर वो क्लास-मॉनिटर बन जाएगी। वो तैयार हो गई। और मेरा भी काम बन गया।

दो-तीन दिन बाद मैं अपना तोहफा घर ले गई। घरवालों से कहा कि यह विंड चाइम उस लड़की ने मॉनिटर बनने की खुशी में मुझे दी है। क्योंकि मॉनिटर बनाने के लिए उसका नाम मैंने ही सर के सामने रखा था। घरवालों ने भी इस बात को आसानी-से मान लिया। हवा के हर झोंके के साथ बजती विंड चाइम की धुन मुझे कभी इस घटना को भूलने नहीं देती।

हमारी यह दोस्ती बारहवीं तक यूँही चलती रही। फिर कॉलेज अलग-अलग हो गए। और बाद में शहर भी। पर दोस्त तो हम अब भी हैं।

व्हॉट्सऐप मीडिया से साभार
चित्र: शुभम लखेरा

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

कुछ लोगों को कड़वा स्वाद (जैसे कि करेले, काली चाय, कॉफी, डार्क चॉकलेट आदि) क्यों पसन्द होता है?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

अगली बार के लिए सवाल है—

अगर तुम अपना नाम बदलकर कुछ और रखना चाहो तो क्या रखोगे, और क्यों?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो।
चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो।
हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

चित्र: हिमांशु हंसराज, आठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा

कुछ लोग कड़वी चीज़ इसलिए खाते हैं क्योंकि उनकी मजबूरी होती है। और बहुत-से लोग बीमार रहते हैं। इसलिए उन्हें कड़वी चीज़ें खानी पड़ती हैं। और कुछ लोग इसलिए खाते हैं ताकि उनकी सेहत ठीक रहे। और वे बीमारियों से बचे रहें।

चाँदनी, आठवीं, दीपालया लर्निंग सेंटर, दिल्ली

कुछ लोग गरीब होते हैं। उनके पास अच्छी चीज़ें खाने के लिए पैसे नहीं होते हैं। कड़वी चीज़ें सस्ती होती हैं। इसलिए इन्हें खरीदते और खाते-पीते हैं। हमारे पापा मज़दूर हैं। और हम सब काली चाय पीते हैं जिसका स्वाद कड़वा होता है। पर हमें काली चाय पीने की आदत है। इसलिए इसका स्वाद हमें अच्छा लगता है।

राजा, दूसरी, अपना स्कूल, सम्राट सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

मुझे नीम के पत्ते का कड़वा स्वाद इसलिए पसन्द है क्योंकि वो मेरे खून को साफ रखता है और इससे मुझे मच्छर भी कम खाते हैं।

चित्र: लावण्या कंसल, तीसरी, सेंट पॉल स्कूल, नई दिल्ली

मुझे डार्क चॉकलेट पसन्द नहीं। क्योंकि वो कड़वी होती है। लेकिन मैं करेले की सब्ज़ी खाना पसन्द करता हूँ। मेरी मम्मी करेले की बहुत अच्छी सब्ज़ी बनाती हैं। इसलिए मुझे करेले की सब्ज़ी और भी अच्छी लगती है।

राघव सिंह सूद, बारह वर्ष, मंज़िल संस्था, दिल्ली

जिनके माता-पिता को कड़वे स्वाद वाली चीज़ें पसन्द होती हैं उनके घर में ये चीज़ें आए दिन बनती रहती हैं। जिसकी वजह से उनको ना चाहते हुए भी ये चीज़ें खानी पड़ती हैं। धीरे-धीरे उनको ये चीज़ें खाते-खाते आदत हो जाती है। और फिर ये पसन्द आने लगती हैं। जैसे मेरी मम्मी को करेला बहुत पसन्द है। इस वजह से हमें मजबूरन खाना पड़ता है। देखते हैं, वो दिन कब आता है जब हमें कड़वे करेले का स्वाद पसन्द आने लगे।

आरोही प्रसाद, पाँचवीं, गुजरात पब्लिक स्कूल, बड़ौदा, गुजरात

कुछ लोग अपने आप को फिट रखने और सुन्दर दिखने के लिए करेले, काली चाय, डार्क चॉकलेट आदि कड़वी चीज़ों का सेवन करते हैं। इनका सेवन करने से हमारे शरीर का विषैला पदार्थ बाहर निकल जाता है। और हमारा शरीर स्वस्थ रहता है।

कल्पना, तीसरी, अपना स्कूल, सम्राट सेंटर, कानपुर, उत्तर प्रदेश

कुछ लोगों को कड़वी चीज़ें इसलिए पसन्द होती हैं क्योंकि उनमें पौष्टिक तत्व होते हैं। जैसे कि नीम बहुत कड़वा होता है लेकिन कुछ लोग उसे इतना चाव से खाते हैं कि मानो अमृत मिल गया हो।

छोटू परमार, नौवीं, देवास, मध्य प्रदेश

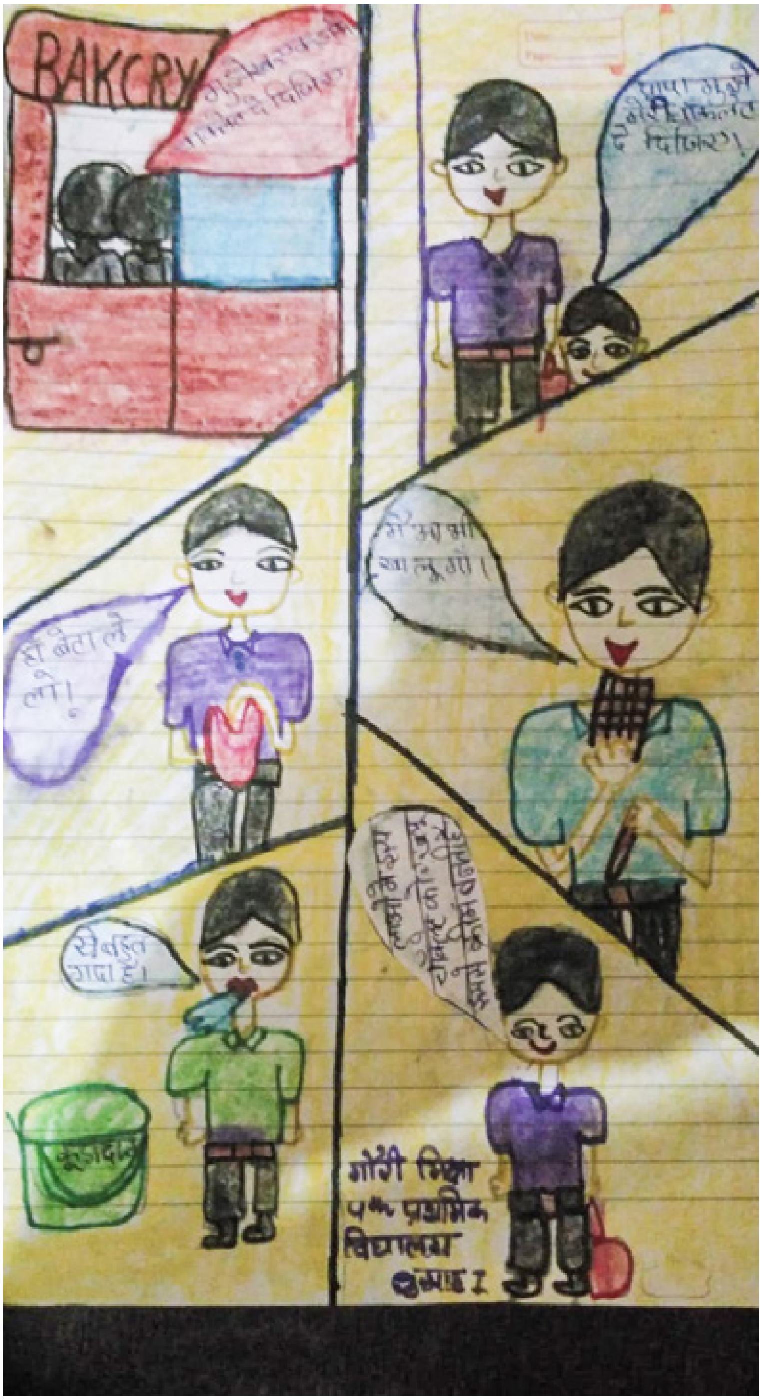

मुझे करेला तो पसन्द नहीं पर डार्क चॉकलेट पसन्द है। क्योंकि करेला कड़वा है। कड़वी तो डार्क चॉकलेट भी है पर जब मैं चॉकलेट का नाम सुनती हूँ तो मेरे दिमाग में एक मिठास की तस्वीर बनती है। जिस वजह से मुझे डार्क चॉकलेट मीठी-मीठी लगने लगती है।

अवनि सिंह, तेरह वर्ष, मंज़िल संस्था, दिल्ली

कड़वी तो डार्क चॉकलेट भी होती है। पर जब उसे केक में डालो तो लोगों को इतना मज़ा आता है कि वाह-वाह करते हैं। और अगर खाली डार्क चॉकलेट दे दो तो उनका मुँह पके आम की जगह सड़े हुए चीकू की तरह हो जाता है।

वेदान्त राज परमार, नौवीं, देवास, मध्य प्रदेश

चित्र: गौरी मिश्रा, चौथी, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

जिस तरह हर व्यक्ति की सोच अलग-अलग होती है, उसी तरह हर व्यक्ति की जुबान का स्वाद भी अलग-अलग होता है। इसी कारण कुछ लोगों को कड़वी चीज़ें खाने में परेशानी नहीं होती।

नियति जैन, दसवीं, सेंट थॉमस अकादमी, देवास, मध्य प्रदेश

शायद उन लोगों को डाइबिटीज़ का डर होगा। तभी तो वो कभी मीठा नहीं खाते होंगे। और इसीलिए उन्हें कड़वा पसन्द होगा।

रिद्धि रत्नावत, दसवीं, केरला पब्लिक स्कूल, देवास, मध्य प्रदेश

भाग – 1

नन्हा राजकुमार

एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी
अनुवाद : लालबहादुर वर्मा

इस अंक से हम एक नया धारावाहिक शुरू कर रहे हैं — नन्हा राजकुमार। यह एक फ्रेंच लघु उपन्यास *ल प्ती प्रैंस* का हिन्दी अनुवाद है। इसे कई वर्ष पहले हमारे साथी लालबहादुर वर्मा ने मूल फ्रेंच से अनूदित किया था और दृष्टिकोण नाम की एक प्रकाशन संस्था ने इसे प्रकाशित किया था। उनके सौजन्य से यह कहानी *चकमक* में जुलाई 1988 से जनवरी 1989 के अंकों में प्रकाशित हुई थी। मई 2021 में लालबहादुर वर्मा का निधन हो गया। उनकी बेटी आशू शर्मा की अनुमति के साथ इस कहानी को हम उनकी याद में दोबारा प्रस्तुत कर रहे हैं।

इसके चित्र भी लेखक ने ही बनाए हैं। सैंतक्ज़ूपेरी की मौत 1944 में हुई और 2015 में मूल किताब और उसके चित्र पब्लिक डोमेन में आ गए। सो हम मूल चित्रों का उपयोग कर पाए हैं।

सैंतक्ज़ूपेरी ने अपने एक दोस्त को उपन्यास समर्पित करते हुए लिखा,

लेओं वेर्थ को

बच्चो, मैं क्षमा चाहता हूँ क्योंकि मैंने यह पुस्तक एक वयस्क को समर्पित की है। कारण? — यह वयस्क दुनिया में मेरा सबसे प्रिय दोस्त है। फिर वह सब कुछ समझ सकता है — बच्चों की पुस्तकें भी। एक और बात है, वह इस वक्त फ्रांस में भूख और सर्दी से जूझ रहा है। ये सब कारण पर्याप्त न लगें तो मैं पुस्तक अपने मित्र के बचपन को समर्पित कर सकता हूँ। आखिर सारे के सारे वयस्क कभी बच्चे ही तो थे (पर कहाँ याद रहती है इसकी उन्हें), तो समर्पण के शब्द बदल देता हूँ —

लेओं वेर्थ को
जब वह बच्चा था!

नन्हा राजकुमार का लेखक सैंतेक्ज़ूपेरी एक पायलट था। यह कहानी भी एक पायलट की है। पायलट की भेंट रेगिस्तान में एक नन्हे राजकुमार से होती है। पायलट अपना रास्ता भटक गया है — मौत उसके सामने खड़ी है। लेखक ने जब यह उपन्यास लिखा तब द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था।

मैं कोई छह साल का रहा होऊँगा जब मुझे एक किताब मिली — *जंगल की सच्ची कहानियाँ*। उसमें एक अद्भुत तस्वीर थी। अजगर एक जंगली जानवर को निगल रहा था। यह रही वह तस्वीर।

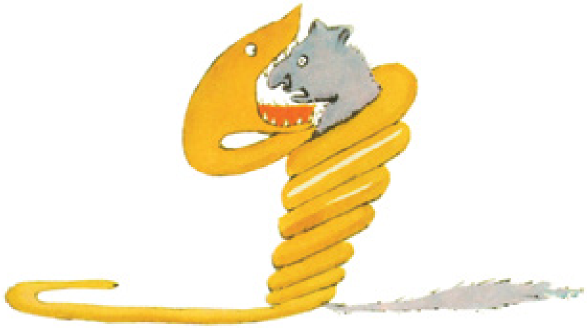

किताब में लिखा था कि अजगर अपने शिकार को पूरा का पूरा निगल जाता है। बिना चबाए। फिर तो वह हिल भी नहीं सकता। और छह महीने लगातार उसे पचाता हुआ बस सोता रहता है।

तब से जंगल की इस भयानक घटना पर मैं बराबर सोचता रहा। और एक दिन अपनी रंगीन पेन्सिल से मैंने पहली बार एक चित्र बनाया।

अपना यह चित्र मैंने बड़े लोगों को दिखाया। मैंने पूछा, "इसे देखकर डर लगता है या नहीं?"

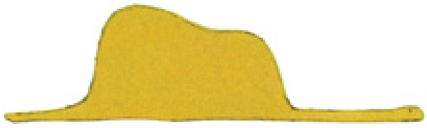

उन्होंने उत्तर दिया, "भला, टोपी से डर क्यों लगेगा?"

मैंने टोपी तो बनाई नहीं थी। मैंने एक अजगर बनाया था जो हाथी को निगलकर पचा रहा था। आखिर मैंने साँप के पेट के अन्दर की भी तस्वीर बनाई ताकि ये बड़े लोग भी समझ सकें। ये बिना समझाए कुछ नहीं समझते। मेरा दूसरा चित्र कुछ इस प्रकार था।

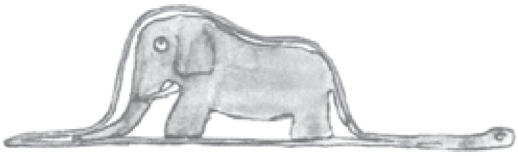

उन लोगों ने मुझे सलाह दी कि मुझे अजगर के चित्र बनाना छोड़कर भूगोल, इतिहास, गणित और व्याकरण में मन लगाना चाहिए। और इस तरह उस नन्ही-सी उम्र में ही मुझे अपनी महान कलाकार बनने की इच्छा त्यागनी पड़ी। मेरे पहले दो चित्रों की असफलता पर ही मुझे हतोत्साहित कर दिया गया। ये बड़े लोग अपने आप कुछ नहीं समझते और बच्चों को इन्हें समझाते रहना आसान नहीं।

अब मुझे दूसरा पेशा चुनना पड़ा। और मैंने हवाई जहाज़ चलाना सीख लिया। सारी दुनिया में उड़ता फिरा। भूगोल पढ़ना काफी काम आया। चीन हो या एरिज़ोना, एक ही झलक में पहचान सकता था। यदि हवाई जहाज़ भटक जाए तो भूगोल पढ़ना बहुत काम आता है।

अपनी उड़ानों के दौरान मेरा कई महत्वपूर्ण लोगों से परिचय हुआ। मैंने उनके साथ काफी समय बिताया। उन्हें करीब-से देखा-समझा। पर उनके बारे में मेरी राय नहीं बदली।

जब भी कोई महानुभाव मिलते जो थोड़े जागरूक लगते तो मैं उन्हें अपना बनाया हुआ पहला चित्र (जिसे मैं हमेशा पास रखता था) दिखाता। मैं देखना चाहता था कि वे इसे समझ पाते हैं या नहीं। हमेशा यही उत्तर मिलता, “यह तो टोपी है।” फिर मैं उनसे ना अजगर की बात करता, ना जंगल की और ना ही सितारों की। मैं उन्हीं की तरह मौसम, ताश, राजनीति या फैशन की बातें करने लगता और वे मुझ जैसे समझदार व्यक्ति से मिलकर खुश होते।

छह साल पहले तक मैं बिना किसी से मन की बात किए, एकाकी-सा, जीता रहा। एक दिन सहारा के रेगिस्तान में मेरा जहाज़ बिगड़ गया और मुझे उतरना पड़ा। ना तो मेरे साथ कोई मिस्त्री था, ना यात्री। झक मारकर अकेले ही उसे ठीक करने की बात सोची। मेरे लिए ज़िन्दगी-मौत का सवाल था। मेरे पास मुश्किल से आठ दिनों के लिए पीने का पानी था।

पहली शाम, बस्ती से हज़ारों मील दूर, रेत पर लेटे हुए ऐसा लग रहा था मानो मैं जहाज़ से टूटकर सागर में बहता हुआ एक तख्ता हूँ। कल्पना कीजिए कि ऐसे में मुझे कितना आश्चर्य हुआ होगा जब तड़के एक अजीब कच्ची-सी आवाज़ ने मुझे जगाया।

“सुनिए! मेरे लिए एक भेड़ की तस्वीर बना दीजिए।”

“एक भेड़ का चित्र...”

मैं ऐसे उछल पड़ा जैसे पलीते पर पैर पड़ गया हो। आँख मली और ठीक-से देखा। एक विचित्र और छोटा-सा लड़का मुझे चुपचाप निहार रहा था। बाद में मैंने याद करके उसकी जो सबसे अच्छी तस्वीर बनाई, वह यह रही।

वह इस तस्वीर से कहीं अधिक आकर्षक था। तस्वीर उसके जैसी नहीं बनी तो इसमें मेरा क्या दोष। बचपन में ही बुज़ुर्गों ने हतोत्साहित जो कर दिया था। तब से मैं अजगर के अलावा कुछ भी बनाना नहीं सीख पाया।

अचम्भे में पड़ा मैं इस छाया-सी आकृति को खुली-खुली आँखों से देखता रहा। भूलिए मत कि मैं बस्ती से

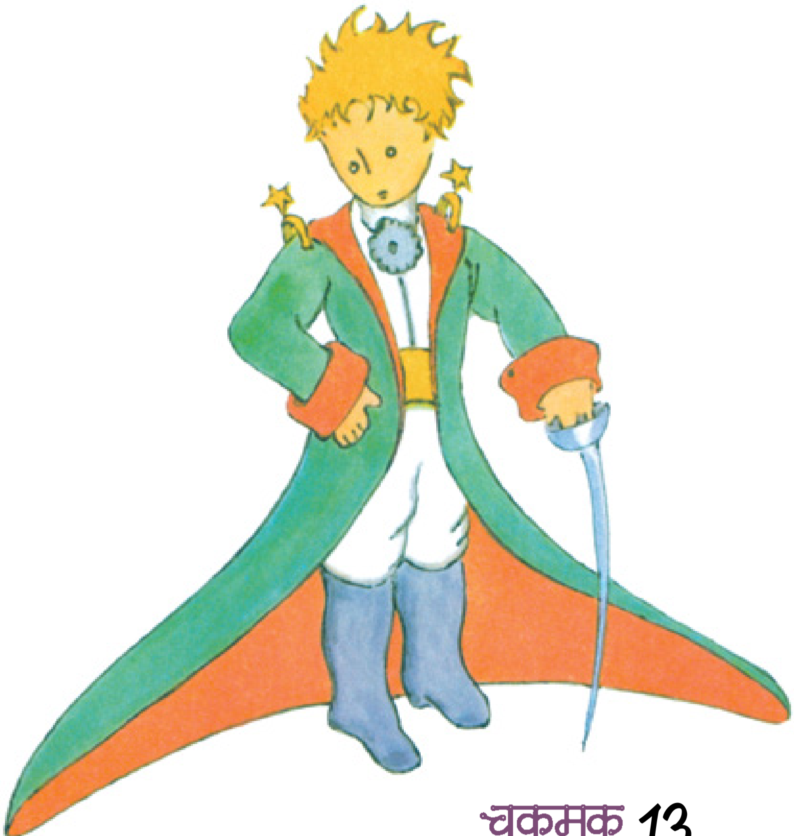

हज़ारों मील दूर था और यह लड़का ना तो भटका हुआ लगता था और ना ही भूखा, प्यासा या डरा हुआ। ऐसा ज़रा भी नहीं लगता था कि वह इस निर्जन में खो गया है। आखिर जब बोली निकली तो मैंने कहा, “पर... पर तू यहाँ क्या कर रहा है?” और धीरे-से जैसे कोई भारी बात कहनी हो, उसने दोहराया, “मेरे लिए एक भेड़ का चित्र बना दीजिए।”

सब कुछ अजीब और रहस्यमय लग रहा था। बात टालने का साहस नहीं हुआ। निर्जन स्थान में जबकि मौत सर पर मँडरा रही हो यह चित्र बनाने की बात हास्यास्पद लगी। फिर भी मैंने जेब से कागज़ और कलम निकाल लिए। लेकिन मैंने तो विशेषकर इतिहास, भूगोल और व्याकरण पढ़ी थी। मैंने थोड़ा झुँझलाकर कहा कि मुझे चित्र बनाने नहीं आते।

“कोई बात नहीं। भेड़ बनाओ ना!” उसने जवाब दिया।

मुझे भेड़ बनाना आता नहीं था। मैंने वही चित्र बनाया जो आता था। मैं चकित रह गया जब वह बोला, “नहीं, नहीं। मुझे अजगर के पेट में बन्द हाथी नहीं चाहिए। अजगर खतरनाक होता है और हाथी बड़ा ही भारी-भरकम। मेरे घर तो सब कुछ छोटा-छोटा सा है। मुझे भेड़ ही चाहिए।”

आखिर मैंने बनाया।

उसने ठीक-से देखा और बोला, “यह तो अभी से बीमार है। दूसरी बनाओ।”

मैंने फिर बनाया।

मेरे दोस्त के होंठों पर एक हल्की-सी सहानुभूतिपूर्ण हँसी खिल गई।

“देखो ना, ...यह भेड़ थोड़े ही है। यह तो भेड़ा है। इसके तो सींग हैं।”

मैंने फिर बनाया।

उसने फिर नहीं स्वीकारा।

“यह तो बूढ़ा है। बहुत दिन जिएगा थोड़े ही।”

मुझे अपने जहाज़ की मोटर ठीक करनी था। मेरा धीरज टूट गया। मैंने घसीटकर यह चित्र बनाया। और झिड़कता हुआ बोला, “यह रहा बक्सा। तुम्हारी भेड़ इसी के अन्दर है।”

लेकिन मुझे थोड़ा अचरज हुआ अपने इस नन्हे-से जज के मुँह पर एक चमक देखकर, “मुझे बिलकुल ऐसा ही चाहिए था। इसके लिए बहुत-सी घास चाहिए क्या?”

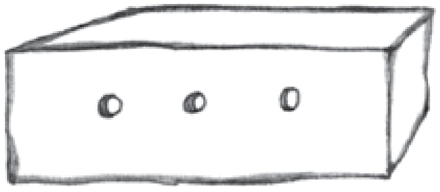

“क्यों?”

“क्योंकि मेरा घर बहुत छोटा है।”

“उतना बहुत है। मैंने तुम्हें एक छोटी-सी भेड़ दी है।”

उसने चित्र पर सिर झुकाया।

“इतनी छोटी थोड़े ही है... देखो? सो रही है।”

और यह थी मेरी पहली मुलाकात उस नन्हे राजकुमार से।

मुझे यह समझने में कई दिन लग गए कि आखिर वह नन्हा राजकुमार है कौन, कहाँ से आया है। वह मुझसे तो बहुत सारे सवाल पूछता। पर लगता था कि मेरी बिलकुल नहीं सुनता। मुझे धीरे-धीरे उसकी ही बातों से सब कुछ पता चला। इस प्रकार जब उसने मेरा जहाज़ पहली बार देखा (जहाज़ का चित्र बनाना मेरे बस की बात नहीं) तो पूछ बैठा, “यह क्या चीज़ है?”

“यह कोई चीज़ थोड़े ही है। यह उड़ती है। जहाज़ है जहाज़ – मेरा जहाज़।”

मैंने बड़े गर्व से बताया कि मैं आकाश में उड़ सकता हूँ। मेरी बात सुनते ही वह चिल्ला पड़ा, “क्या कहा? तू आसमान से गिरा है!”

“हाँ,” मैंने सकुचाते हुए कहा।

“यह तो बड़े मज़े की बात है।”

और वह खिलखिलाकर हँसा। मुझे उसका हँसना बुहत खला। मन ही मन मैं चाहता हूँ कि लोग मेरे दुख से दुखी हों। मेरी मन:स्थिति को बिना समझे वह बोला, “तू भी आसमान से आया है? तेरा घर किस ग्रह पर है?” उसकी रहस्यमय उपस्थिति मेरे समझ में आने लगी। मैंने पूछा, “तो तू किसी दूसरे ग्रह से आया है क्या?”

उसने जवाब नहीं दिया। मेरा जहाज़ देखता हुआ सर हिलाता रहा, “इस तरह तू इस जहाज़ पर कहीं बहुत दूर से नहीं आ सकता...”

और वह बड़ी देर तक कल्पना लोक में डूबा रहा। फिर जेब से भेड़ का चित्र निकालकर उसे ऐसे निहारने लगा जैसे वह कोई खज़ाना हो।

ज़रा सोचिए उसकी बातों में किसी दूसरे ग्रह की चर्चा से मुझे कितना कौतूहल हुआ होगा। मैंने और भी जानना चाहा, “मेरे नन्हे राजकुमार! कहाँ से आया है तू? तेरा घर कहाँ है? तू मेरी भेड़ कहाँ ले जाना चाहता है?”

थोड़ी देर की तन्मयता के बाद वह बोला, “तूने मुझे जो बक्सा दिया है उसमें एक अच्छाई है – रात को वह मेरी भेड़ के लिए घर का काम देगा।”

“बिलकुल ठीक! और यदि तू भला लड़का है तो मैं तुझे एक रस्सी और एक खूँटा भी दे दूँगा, उसे बाँधने के लिए।”

बाँधने की बात सुनकर वह हैरान-सा हो गया, “बाँधने के लिए? अजीब बात है!”

“लेकिन अगर तूने उसे बाँधा नहीं तो वह जहाँ मन करे चली जाएगी और खो जाएगी।”

मेरा नन्हा दोस्त फिर खिलखिलाया, “मगर जाएगी कहाँ?”

“कहीं भी नाक की सीध में।”

विषाद भरे स्वर में उसने कहा, “कोई बात नहीं। मेरा ग्रह बहुत छोटा है। वहाँ सीधे दूर तक नहीं जा सकता कोई।”

इस प्रकार मुझे दूसरी बात का पता चला कि वह जिस ग्रह से आया है वह मुश्किल से इतना बड़ा है जितना एक घर।

अगले अंक में जारी...

तटरेखा को नापना

उमा सुधीर

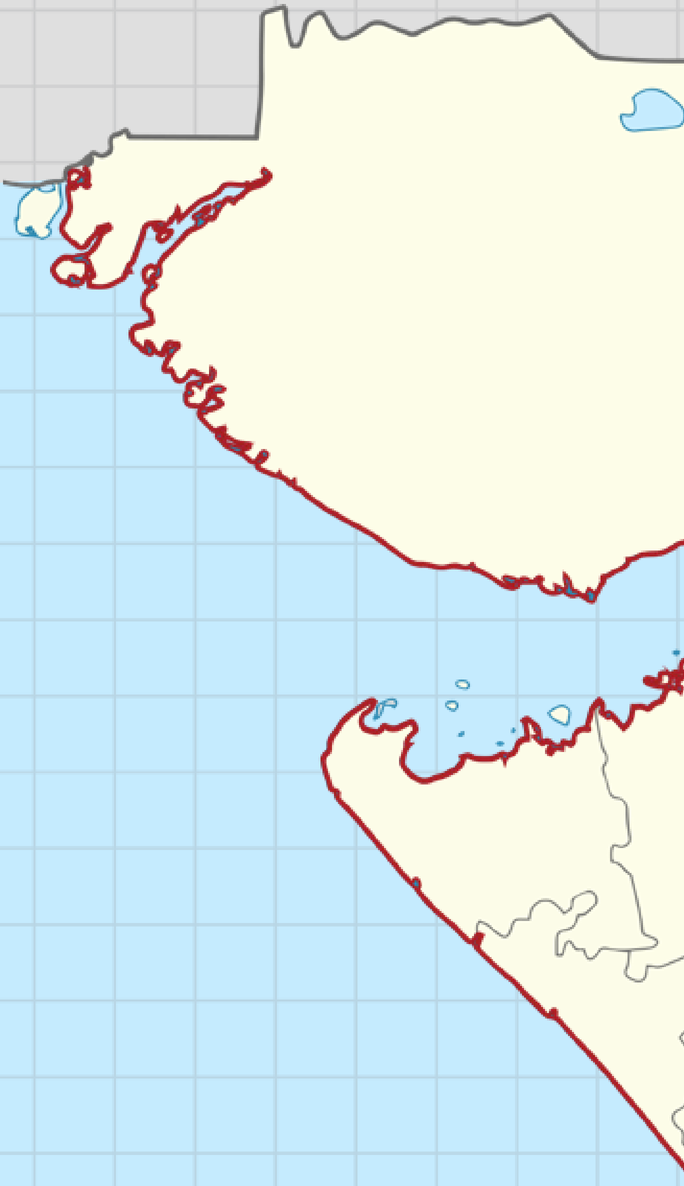

एक कील से शुरुआत करते हैं। जब हमें किसी कील की लम्बाई नापना हो तो उसे 6 इंच स्केल से नापकर देख सकते हैं। ऐसा करने पर कील की लम्बाई यदि 3.7 सेंटीमीटर और 3.8 सेंटीमीटर के निशान के बीच आ रही है तो इस लम्बाई को हम कैसे बताएँ? हम चाहते हैं कि हमें कील की एकदम ठीक-ठीक लम्बाई पता चल जाए। तो हमने वर्नियर कैलीपर्स की मदद से कील की लम्बाई नापी। इस बार लम्बाई 3.73 सेंटीमीटर निकली। किसी दोस्त ने नापी तो 3.74 सेंटीमीटर निकली।

नपाई में घट-बढ़ तो होती ही है। नापते समय कितनी सावधानी बरत रहे हैं यह तो महत्वपूर्ण है ही। लेकिन मापने वाले उपकरणों में भी कुछ खामियाँ होती हैं। अलग-अलग स्केलों से या उपकरणों से नापने पर भी फर्क आ सकता है। यही वजह है कि अगर चीज़ों का सही-सही नाप लेना हो तो बहुत सावधानी के साथ कई बार नाप लिए जाते हैं और उनका औसत नाप निकाला जाता है। इसके बाद ही यह अन्दाज़ा लगाया जाता है कि वास्तविक माप औसत माप के आसपास कहीं है। और हमने जो सबसे बड़े व छोटे माप निकाले हैं यह उनके बीच कहीं है। जैसे कि ऊपर के उदाहरण में हम कह सकते हैं कि कील का सही नाप 3.7 सेंटीमीटर और 3.8 सेंटीमीटर के बीच में तो है ही।

अब हम आते हैं समुद्र की तटरेखा की लम्बाई पर। इसके लिए भारत का मानचित्र लेते हैं। तुमने शायद एक घुमावदार लाइन की लम्बाई नापने का तरीका सीखा होगा। किसी धागे या डोर को घुमावदार लाइन के पहले सिरे से लेकर आखिरी सिरे तक के सारे मोड़ों से होते हुए सटाकर रख दो। फिर धागे को सीधा करो और उसे स्केल से नाप लो।

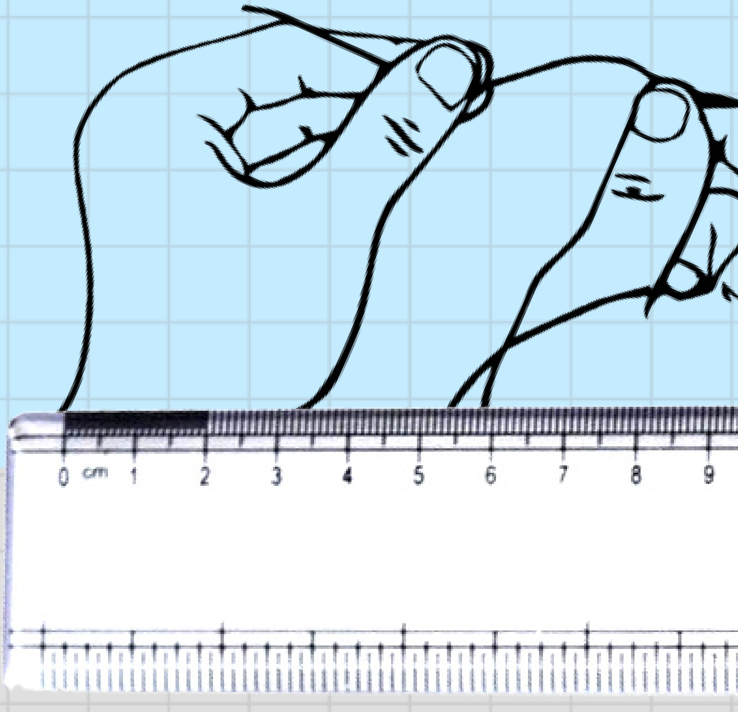

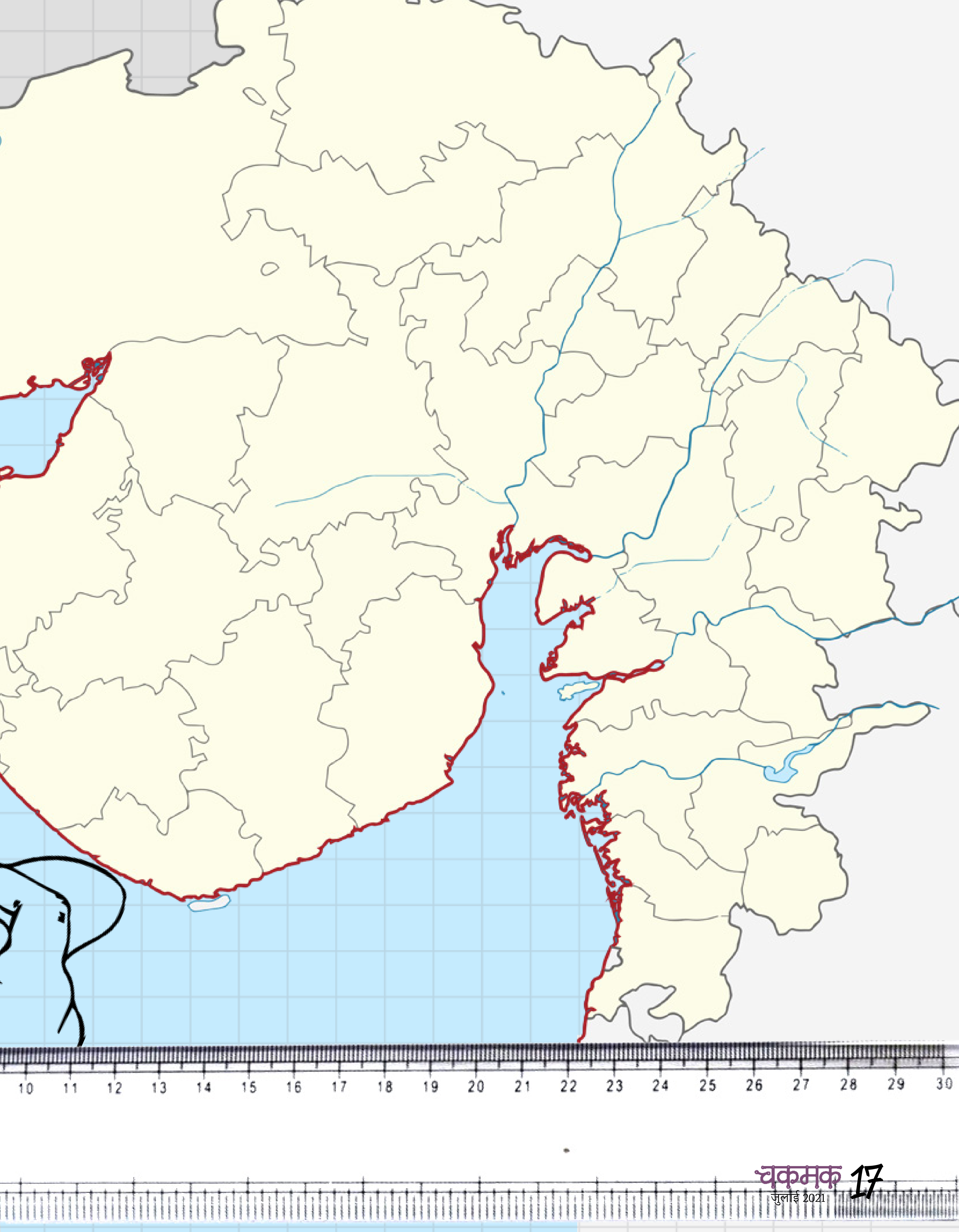

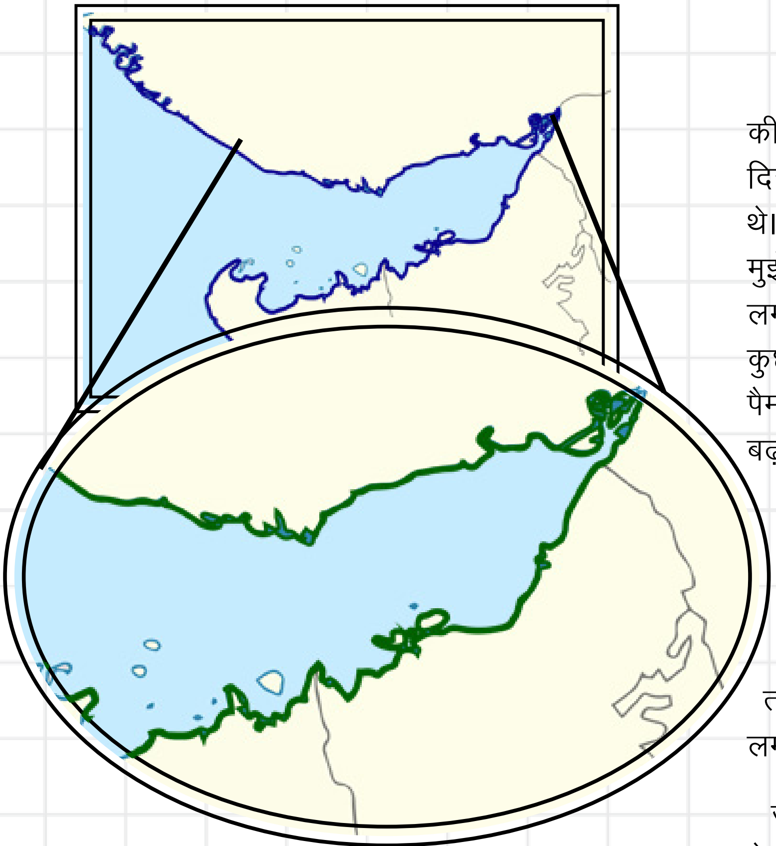

हमारी तटरेखा की लम्बाई पता करने के लिए हमें एक डोर को मानचित्र की तटरेखा से सटाकर रखना होगा। फिर उस डोर को नापना होगा। फिर उस संख्या को मानचित्र के पैमाने से गुणा करना होगा। यानी कि अगर मानचित्र की तटरेखा की लम्बाई हमारे स्केल से 10 सेंटीमीटर आती है और अगर मानचित्र का पैमाना 1 सेंटीमीटर = 100 किलोमीटर है, तो मानचित्र पर 1 सेंटीमीटर ज़मीन पर 100 किलोमीटर के बराबर है। तो हमें 10 को 100 किलोमीटर से गुणा करना होगा... इस स्थिति में हमारी तटरेखा की असली लम्बाई 1000 किलोमीटर होगी।

अब गुजरात की तटरेखा की लम्बाई पता लगाते हैं। मैंने ओखा से जामनगर तक के हिस्से को नापा और तब मुझे एक रोचक बात समझ में आई। जब पैमाना 1 सेंटीमीटर = 100 किलोमीटर है तब इन दो शहरों के बीच तटरेखा को नापने वाले धागे की लम्बाई लगभग 2 सेंटीमीटर होती है। इस स्थिति में वास्तविक तटरेखा की लम्बाई लगभग 200 किलोमीटर (2x100) होती है। अब हम ज़ूम करते हैं, यानी कि अब पैमाना 1 सेंटीमीटर = 10 किलोमीटर का हो गया। तो अब मुझे मानचित्र की तटरेखा में ज़्यादा बारीकियाँ दिखीं। ज़्यादा मोड़ दिखे जो पहले वाले पैमाने पर दिखाई नहीं दे रहे थे। इस कारण अब नापने पर तटरेखा की लम्बाई मुझे कुछ ज़्यादा मिली। पैमाने के छोटा होने पर इस लम्बाई में बढ़ोतरी बहुत ज़्यादा तो नहीं थी, लेकिन कुछ तो थी। क्या इसका मतलब है कि अगर हम पैमाने को कम करते जाएँ तो तटरेखा की लम्बाई बढ़ती ही जाएगी?

तुम भी इसे देख सकते हो। बगल में गुजरात की तटरेखा के दो चित्र दिए गए हैं। ऊपर वाले चित्र में पैमाना ज़्यादा है और नीचे वाले में कम। कौन-से चित्र में तुम्हें ज़्यादा मोड़ दिखते हैं? हो सके तो धागे के साथ नापकर देखना कि तटरेखा कि लम्बाई किस चित्र में ज़्यादा है।

जब लोगों ने अलग-अलग तटरेखाओं को मापकर देखा तो नतीजा यही मिला है कि तटरेखा की लम्बाई पैमाना कम होने के साथ-साथ बढ़ती जाती है। लेकिन यह बढ़ोतरी बहुत कम होती है। और ये मामला इससे भी कुछ पेचीदा है। कहीं-कहीं पैमाने का असर ज़्यादा होगा तो कुछ अन्य जगहों पर कम। ये इस पर निर्भर करता है कि समुद्र तट में कितनी उबड़-खाबड़ है। उदाहरण के लिए न्यूज़ीलैंड का मानचित्र देखो। बाईं तरफ के समुद्र तट में दाईं तरफ के तट की तुलना में कहीं ज़्यादा मोड़ हैं। अगर हम इस द्वीप की तटरेखा को अलग-अलग पैमानों पर नापते हैं तो बाईं तरफ की तटरेखा में लम्बाई का अन्तर ज़्यादा मिलेगा। सुनामी की तैयारी में हो रहे खर्चे पर तटरेखा की लम्बाई का असर पड़ता है तो इसके मायने भी काफी हैं।

बहरहाल, समुद्र तट में छिपी और दिक्कतें तब सामने आती हैं जब हम उसे नापने का सोचते हैं :-)। तुमने ज्वार भाटा के बारे में तो सुना होगा। घटते-बढ़ते ज्वार के साथ तटरेखा की लम्बाई घटती-बढ़ती रहती है। अब तटरेखा की कौन-सी लम्बाई मानोगे – ऊँचे ज्वार के समय की या फिर भाटे के समय की। इसकी बात कभी और...

कटे खेतों में बीनना

उमेश कुमार सिंह
चित्र: नीलेश गहलोत

तालाबन्दी में बचपन

20 मार्च जब मैं हॉस्टल से घर गया, तो यह सोचकर गया था कि मैं बोर्ड के बचे हुए दो पेपर देने ज़्यादा से ज़्यादा दस दिनों में वापस आ जाऊँगा। मैं अपनी विज्ञान और हिन्दी की पुस्तकें भी साथ ले गया था ताकि तैयारी कर सकूँ। लेकिन लॉकडाउन बढ़ता रहा। और मैं लगभग 3 महीने (सटीक से पूरे 82 दिन) बाद हॉस्टल लौटा। बोर्ड के लम्बित पेपर रद्द कर दिए गए हैं और परिणाम घोषित होने वाले हैं। मेरा छोटा भाई नितेश (जो छह साल का है) अभी भी घर पर है। मैं इसलिए आया हूँ क्योंकि आईटीआई के आवेदन की घोषणा हो गई है और मुझे फॉर्म भरने हैं।

मेरी माँ गाँव-गाँव घूमकर मनिहारी सौदा बेचती हैं। कुछ साल पहले मेरे पिता का निधन हो गया था। मेरे बूढ़े दादा (जो कुछ कमाकर घर चलाने में मदद करते हैं) अब बहुत बूढ़े हो गए हैं। पिछले करीब पाँच महीने से वह बिस्तर पर हैं। वह बाथरूम तक नहीं जा सकते। एक रिश्तेदार – खाड़या इन दिनों हमारे साथ रहता है। वह 7-8 साल से ओबेदुल्लागंज से दूर था। वह धार की एक जेल में था। जब वह लौटा तो उसे पता चला कि उसकी पत्नी उसे छोड़कर चली गई है और उनके बेटे को अपने साथ ले गई है। उसके पास रहने का कोई ठिकाना नहीं था। वो अब हमारे साथ ही रहता है। मेरा बड़ा भाई भोपाल में अपने ससुराल वालों के साथ रहता है। मेरी बड़ी बहन की शादी मेरे भाभी के भाई से हुई है। वह भी भोपाल में रहती है। तो घर पर परिवार में हम पाँच लोग हैं – दादा, माँ, मैं, मेरा छोटा भाई नितेश और खाड़या।

हम गरीब हैं। लेकिन भूखे रहने का डर कभी नहीं बना रहता है। पर लॉकडाउन में ये डर हम पर हरदम मँडराता रहा। पिछले तीन महीनों में शायद ही कभी हमारे हाथ में पैसा रहा। सरकार से हमारे परिवार को 80-100 किलोग्राम अनाज मिला था। लेकिन इसके साथ क्या खाएँ? तेल, मसाला, सब्ज़ी या दाल खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। मछली, माँस या दूध तो कल्पना से भी परे था।

तब माँ और खाड़या ने फैसला किया कि हम कटे हुए खेतों से बचे हुए गेहूँ इकट्ठा करेंगे। हमारे इलाके के किसानों ने इस साल चैत में मज़दूरों से गेहूँ नहीं कटवाया। आम तौर पर बड़े किसान भी खेत का कुछ हिस्सा मज़दूरों से कटवाते हैं ताकि मवेशियों के लिए चारा जमा कर लें। लेकिन लॉकडाउन में वो घबरा गए थे। जल्दी से जल्दी कटाई पूरा करना चाहते थे। शायद ही कोई खेत हाथों से काटा गया हो। और अगर किसी खेत में हार्वेस्टर से कटाई की जाती है, तो खेत में काफी बीज और बालियाँ बच जाती हैं। लगभग दो हफ्ते तक हमने बिशनखेड़ा में काटे गए खेतों से गेहूँ इकट्ठा किया।

बिशनखेड़ा गाँव मेरे शहर ओबेदुल्लागंज से सटा हुआ है। वह बड़े किसानों का एक समृद्ध गाँव है। वहाँ कई बड़े पटेल हैं। मोटर साइकिल पर बिशनखेड़ा पहुँचने में मात्र पाँच मिनट लगते हैं। लेकिन सड़क पर पुलिस बनी रहती थी। उनमें अपने लट्ठ को इस्तेमाल करने की जल्दी हमेशा बनी रहती थी। इसलिए हम खेतों तक रेलवे पटरियों के किनारे-किनारे चलकर जाया करते हैं। माँ, खाड़या, नितेश और मैं। हम आम तौर पर सुबह 7 या 8 बजे घर से निकल जाते हैं और जब सूरज ढलने लगता है तो लौट आते हैं। हम घर से खाकर निकलते और दोपहर का खाना साथ बाँधकर ले जाते। कभी-कभी माँ और खाड़या पहले निकल जाते और मैं दोपहर का भोजन पकाने के लिए रुक जाता था। दोपहर के भोजन बाँधकर मैं नितेश को साथ लेकर खेत चला जाता।

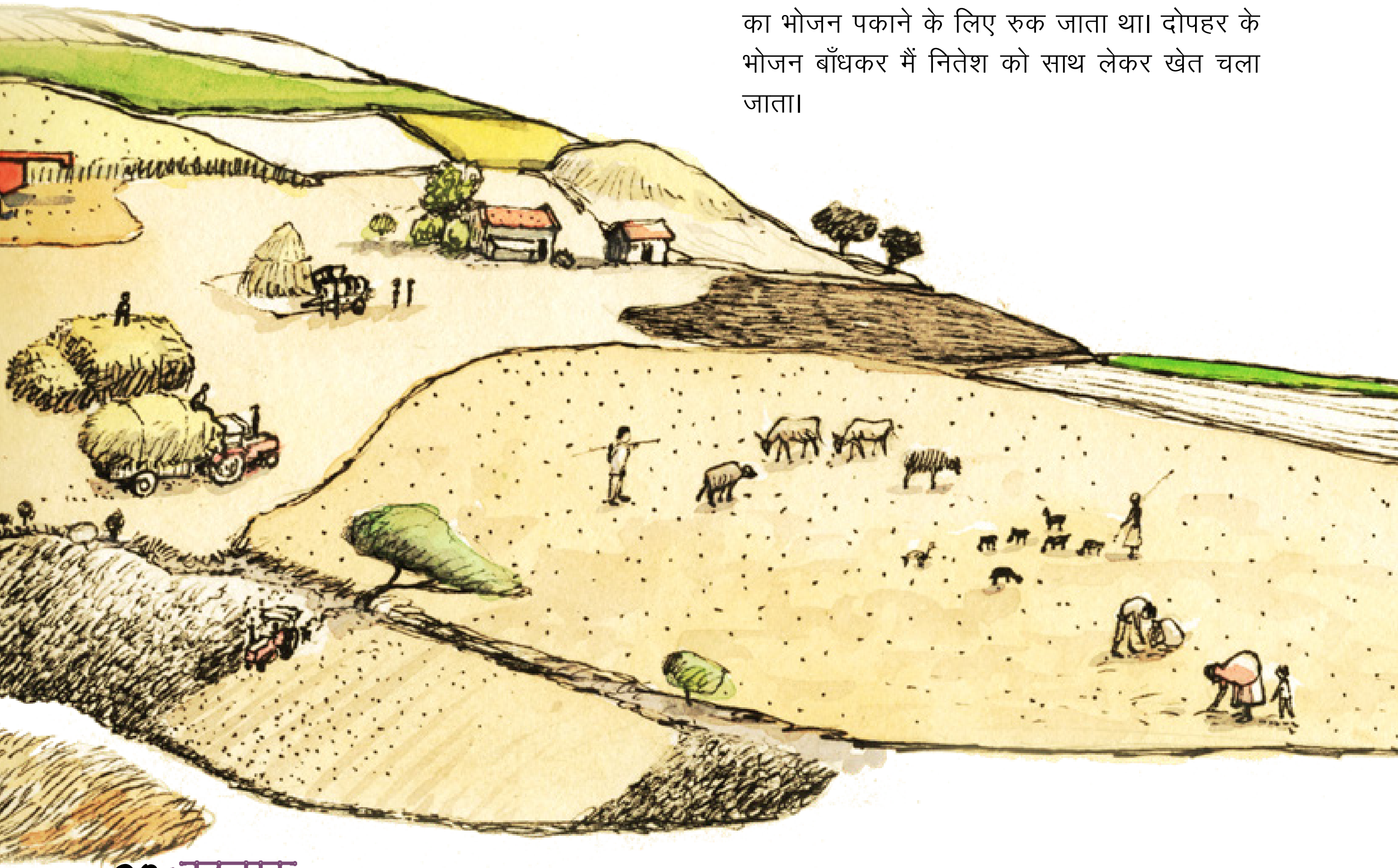

खेतों में बहुत सारी बालियाँ गिरी पड़ी थीं। कुछ डण्ठल अभी भी खड़े थे। हार्वेस्टर फसलों को हँसिया जितनी सफाई से नहीं काट पाता है। किसानों ने हमारे बीनने का विरोध कभी भी नहीं किया। शायद बचे पड़े अनाज को निकालना उनके लिए महँगा सौदा होता। पड़े रहने देना ही उचित था। आसपास के खेतों में हार्वेस्टर खड़ी फसल को अपने अन्दर खींचता और हर थोड़ी देर में ट्रॉलियों में गेहूँ उगलता। हम आराम से बीनते।

हम खेत में गिरी हुई बालियाँ इकट्ठा करते। डण्ठल में लटकी बालियाँ तोड़ते। हम चारों के बीच एक बोरी होती, जिसमें बीने गेहूँ भरते। बीच-बीच में थ्रेशर से गिरे हुए गेहूँ के ढेर मिलते थे। हम उसे भी इकट्ठा कर भर लेते। यह एक कमरतोड़ काम है। लेकिन हमने इसका आनन्द लिया। कटे हुए गेहूँ की ठूँठियाँ बुरी तरह चुभती हैं। बालियों के नुकीले बाल भी चुभते हैं। और बालियों को तोड़ना हाथ से प्लास्टिक की सुतली को तोड़ने जैसा लगता है। पर फिर भी हमें इस काम में बहुत आनन्द मिला।

शाम तक हम 2-3 बोरी बालियाँ जमा कर लेते थे। माँ, खाड़या और मैं अपने सिर पर एक-एक बोरी ढोते। नितेश पानी की बोतल और खाने का डिब्बा लेकर चलता। हमें वापस चलने में लगभग 45 मिनट लगते थे। अगले दिन हम दूसरे खेत में बीनते। लगभग दो सप्ताह तक हमने ये काम रोज़ किया।

एक बार खेतों में कटाई खतम हो गई तो बीनना भी बन्द हो गया। हम अपने बीने हुए गेहूँ की सफाई करने लगे। हम बालियों को एक बोरे में डालते और उसे मोगरी से पीटते। जैसे कपड़े धोते हैं। तब मैं गेहूँ अलग करने उसे छत पर ले जाता। शुक्र है कि हमारे पास अब पक्की छत है। यह घर हमें एक सरकारी योजना के तहत मिला है। मैं गेहूँ को एक बड़ी प्लेट में ले जाता और उसे हवा में ऊँचाई से गिरा देता। हवा पुसला को उड़ा देता और वो थोड़ी दूर जाकर गिरता। गेहूँ ठीक पैर के पास ढेर में जमा हो जाता। मैं गेहूँ को खाली बोरी में इकट्ठा करता। माँ गेहूँ को सूपड़े पे उड़ाकर और भी अच्छी तरह साफ कर देती। यह सब हमने खुद किया। हमारे पास कई बोरों को जोड़कर बना हुआ एक कोठीनुमा विशाल बोरा है। साफ गेहूँ हमने इसमें भर दिए। लगभग 150-200 किलो होना चाहिए।

ये गेहूँ हमारे बहुत काम आया। हम इसे आटा-चक्की में थोड़ा-थोड़ा करके बेचते और मसाला, सब्ज़ी और दाल खरीदते।

एक बार जब गेहूँ साफ हो गया और हमने उसे व्यवस्थित कर रख दिया, तो हम रेलवे लाइन के किनारे लकड़ी बीनने जाने लगे। लेकिन ये एक अलग कहानी है...

उमेश दसवीं कक्षा के छात्र हैं। वह अरण्यावास, भोपाल में रहते हैं। यह लेख उन्होंने 11 जून, 2020 को लिखा था।

फफूँद

ये हर जगह हैं!

ये जानवर, पौधे और बैक्टीरिया नहीं हैं। ये तुम्हारे चारों ओर मौजूद हैं। फिर भी तुमने इन्हें तब ही देखा होगा जब ये “फलते” हैं – मशरूम या फफूँद के रूप में।

फफूँद सारे महाद्वीपों में पाए जाते हैं, यहाँ तक कि अंटार्कटिका में भी। ये चट्टानों, मिट्टी, पानी, पौधों और उनकी जड़ों से लेकर, तनों, पत्तियों और कई बार तो चिड़ियों के पंखों में भी उग जाते हैं। यही नहीं ये तुम्हारे बालों, नाखूनों और त्वचा पर भी उग सकते हैं। इनमें से कुछ फफूँद काम के होते हैं और कुछ खतरनाक।

फफूँदी दावत

तुमने शायद पिज़्ज़ा में मशरूम खाया हो। हो सकता है कि तुमने कई अलग-अलग किस्म के मशरूम भी खाए हों। मशरूम भी एक तरह के फफूँद होते हैं। तुमने शायद नूडल्स में सोया सॉस भी खाया होगा। यह ऐस्पर्जिलस नामक फफूँद से बनता है।

खाना बनाने में इस्तेमाल की जाने वाली एक अलग किस्म की फफूँद है – खमीर (यीस्ट)। इडली, ब्रेड और नान जैसी कुछ चीज़ों को बनाने के लिए कुछ किस्म के खमीर ज़रूरी होते हैं। खमीर खाने की इन चीज़ों को बनाने वाली सामग्री की दावत उड़ाते हैं। और दो से चार, चार से आठ... इस तरह तेज़ी-से अपनी संख्या बढ़ाते जाते हैं। इस दौरान खमीर खाने की इन चीज़ों के स्वाद में तो इज़ाफा करते ही हैं, इनकी संरचना को भी बदल देते हैं।

फील्ड डायरी के लिए

भारत में फफूँद की करीबन सत्ताईस हज़ार किस्में दर्ज की गई हैं। इनमें से आठ सौ पचास किस्में तो मशरूम की ही हैं। चलो फफूँद को ढूँढ़ते हैं और देखते हैं कि तुम्हें कितनी तरह के फफूँद मिल पाते हैं:

तख्ता फफूँद (ब्रैकेट फंगाइ) – यह जीवित या मृत पेड़ों के तनों पर छोटे-छोटे खानों की तरह होते हैं। ये पेड़ों को नुकसान भी पहुँचाते हैं।

काली मोल्ड (ब्लैक मोल्ड) – यह दीवारों और गीली छतों पर काले धब्बों की तरह होते हैं। कभी-कभार ये दीवारों पर रोएँ के रूप में भी उगने लगते हैं।

nature conservation foundation
science for conservation

मशरूम – यह पीले और सफेद हो सकते हैं। इनको तोड़कर अपने घर लाना ठीक नहीं होगा क्योंकि ज़हरीले मशरूम और खाने लायक मशरूम में अन्तर कर पाना बहुत मुश्किल है।

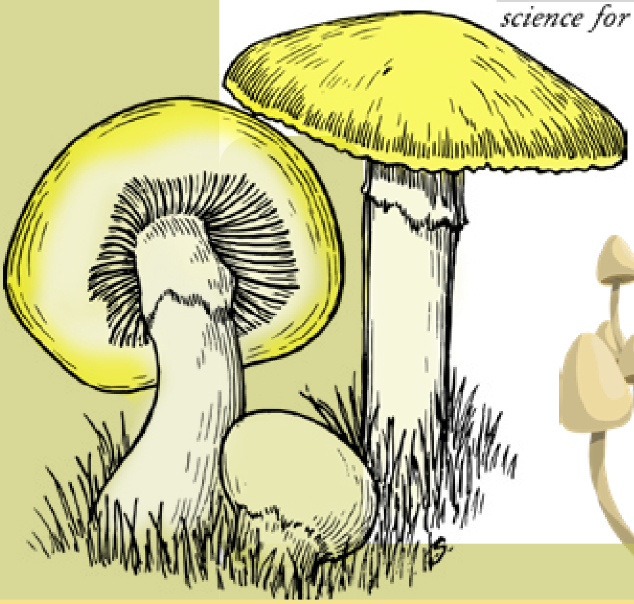

अगर तुम्हें कोई फफूँद मिले तो उसका चित्र बनाओ और उसके बारे में लिखो। वह तुम्हें कहाँ मिला? तख्ता फफूँद और मशरूम को ध्यान-से देखो। उनके ऊपर और नीचे के हिस्सों के चित्र बनाओ। वे किन रंगों के हैं? फफूँद को छूने के बाद अपने हाथों को ज़रूर धोना!

घर में मोल्ड उगाना

मोल्ड फफूँदों का एक समूह होता है। तुमने शायद इन्हें ब्रेड के उन टुकड़ों पर देखा होगा जिन्हें कुछ समय के लिए खुले में रख दिया गया हो। तुम देख सकते हो कि किस तरह की परिस्थितियों में मोल्ड बेहतर पनपते हैं।

फफूँद हमारे चारों तरफ हैं। अक्सर ये हमारे आसपास बहती हवा में भी होते हैं। फफूँद अपना खाना खुद नहीं बना सकते। इसलिए वे अक्सर किन्हीं चीज़ों पर ठहर जाते हैं। हमारा खाना खाकर पनपते हैं और अपनी संख्या बढ़ाते हैं।

ब्रेड की कुछ स्लाइस लो। इन्हें कागज़ की सूखी प्लेट पर रखो। एक स्लाइस को पारदर्शी प्लास्टिक की पन्नी में रखो और पन्नी को अच्छे-से बन्द कर दो।

एक अन्य स्लाइस पर पानी के कुछ छींटें मारो (ज़्यादा गीला मत करना)। इसे भी प्लास्टिक की एक पन्नी में अच्छे-से बन्द करके रख दो। पन्नियों को बिना खोले दोनों ब्रेड को रोज़ देखते रहना। जब तुम्हें स्लाइस पर रंगीन धब्बे दिखाई दें तो उनके रंग को नोट कर लो। धब्बों को करीब-से देखो और उनके विवरण अपनी फील्ड डायरी में नोट कर लो।

प्रतियोगिता

chakmak@eklavya.in पर हमें लिखकर भेजो कि जब तुम फफूँद ढूँढ़ने निकले तो तुमने फफूँद की कौन-कौन सी किस्में देखीं। फील्ड डायरी के अपने चित्र और विवरण हमें भेजो। यह भी बताओ कि तुमने अपने घर मोल्ड को किस तरह उगाया। अपने अवलोकन हमें भेजो और एक किताब जीतने का मौका पाओ।

अनुवाद: मुदित श्रीवास्तव

जो मैं हूँ

बेंजामिन जिरू
पाँचवीं, कम्बरलैण्ड हैड एलेमेंटरी स्कूल,
प्लैट्सबर्ग, न्यू यॉर्क, अमेरिका

मैं थोड़ा-सा जुदा हूँ
मैं थोड़ा अलहदा हूँ
क्या तुम भी इस तरह हो

हवाएँ चलती हैं
और संग उनके बातें चलती हैं
तुम्हारे कान क्या तब बन्द रहते हैं
तुम्हें छूके जब वो निकलती हैं
कोई इक तार है टूटा हुआ है
कोई इस दुनिया में छूटा हुआ है
मैं थोड़ा-सा जुदा हूँ
मैं थोड़ा अलहदा हूँ
मैं फिर भी ये जताना चाहता हूँ
कि तुम मेरी तरह हो

कभी लगता है जैसे
मैं किसी और ही जहाँ का हूँ
सितारे ही सितारे हैं वहाँ पर
मगर मन पूछता है मैं कहाँ का हूँ

मेरी बातों की अक्सर गॉसिपों में ज़िक्र होती है
मैं रोता हूँ, सिमट जाता हूँ, मुझको फिक्र होती है
मैं थोड़ा-सा जुदा हूँ
मैं थोड़ा अलहदा हूँ
और मैं ये मानता हूँ
कि तुम भी तो कहीं मेरी तरह हो

काश दुनिया का कल बदला हुआ अन्दाज़ हो
कोई अलगाए, क्यों छूटे, क्यों नज़रन्दाज़ हो
कल इसी दुनिया में मेरी भी इक जगह होगी
मैं ऐसे सपनों की कोई सदा हूँ
मैं थोड़ा-सा जुदा हूँ
मैं थोड़ा अलहदा हूँ

चित्र: उबिता लीला उन्नी
अनुवाद: सुशील शुक्ल

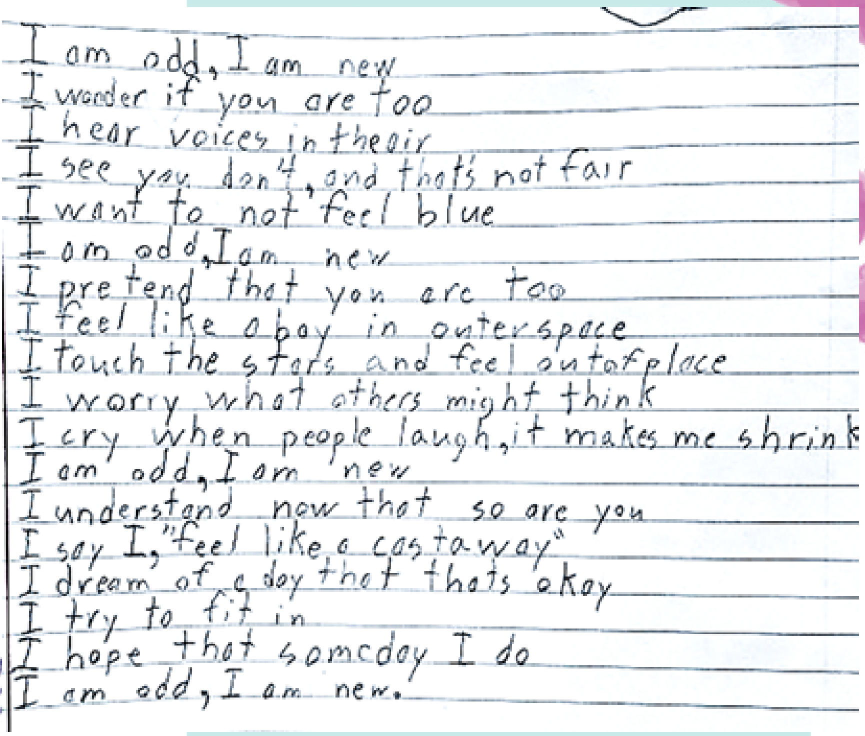

I am odd, I am new
I wonder if you are too
I hear voices in the air
I see you don't, and that's not fair
I want to not feel blue
I am odd, I am new
I pretend that you are too
I feel like a boy in outerspace
I touch the stars and feel outofplace
I worry what others might think
I cry when people laugh, it makes me shrink
I am odd, I am new
I understand now that so are you
I say I, "feel like a castaway"
I dream of a day that thats okay
I try to fit in
I hope that someday I do
I am odd, I am new.

दस साल का बेन ज़्यादा बातें नहीं करता है। उसे 'ऐस्परजर्स सिंड्रोम' है जिसके कारण वह अक्सर बेचैन रहता है। 2018 में नेशनल पोएट्री महीने के अवसर पर उसकी क्लास टीचर ने सभी को अपने बारे में एक ऐसी कविता लिखने को कहा जिसकी हर दो-चार पंक्तियाँ 'आई ऐम...' से शुरू हों। यह सुनकर बेन बहुत खुश हुआ।

बेन ने काफी उत्साह से यह कविता लिखी। सभी को अपनी कविता पूरी क्लास के सामने सुनानी थी। बेन को लगा नहीं कि उसकी कविता इतनी अच्छी है और वह इतना बेचैन हो गया कि उस दिन स्कूल ही नहीं गया। उसके पापा ने उसकी कविता फेसबुक पर पोस्ट की इस उम्मीद से कि शायद दोस्तों-रिश्तेदारों के कमेंट्स से उसकी हिम्मत बढ़ जाए। और कविता वायरल हो गई...

मैं भी वहाँ था...

रुद्राशीष चक्रवर्ती
अनुवाद: लोकेश मालती प्रकाश

मैं उस घटना की बात कर रहा हूँ जिसने दशकों से ब्राज़ील के ज़बरदस्त फैन रहे फुटबॉल-प्रेमी बंगालियों को हमेशा के लिए अर्जेन्टिना का फैन बना दिया। और यह लगभग रातोंरात हो गया। मानो हम सबके दिमाग पर किसी ने ऐसा जादू कर दिया जिसे उसके बाद कोई दोहरा नहीं सका है।

दिन था 22 जून, 1986। जगह — मेक्सिको सिटी का एज्टेका फुटबॉल स्टेडियम। और मौका? हमारे मम्मी-पापा और दादी-दादा की पीढ़ी के लाखों लोग इसका जवाब चुटकी बजाते दे देंगे बशर्ते कि उनके पास उस समय एक अदद टीवी रहा हो जो चलता हो!

जी हाँ। मौका था 1986 के फीफा फुटबॉल वर्ल्ड कप में अर्जेन्टिना व इंग्लैंड के बीच हो रहा क्वार्टर-फाइनल। उस मैच में डिएगो मैराडोना नाम के एक शख्स अर्जेन्टिना की टीम के कप्तान के तौर पर खेल रहे थे।

और अब तक तो लाखों लोग (जो उस तारीख तक इस दुनिया में आए भी नहीं थे) आसानी से बता देंगे कि उस मैच में अर्जेन्टिना ने इंग्लैंड को 1 के मुकाबले 2 गोल से हरा दिया था।

वैसे तो अर्जेन्टिना की तरफ से दोनों गोल उस रहस्यमय शख्स जनाब मैराडोना ने ही किए थे। लेकिन दूसरा गोल कुछ खास था। इतना खास कि दुनिया का हर वो शख्स जिसने उस अर्जेन्टिनियाई कप्तान का नाम सुना हो या भविष्य में कभी सुनेगा, उसने यकीनन उस गोल के बारे में भी सुना होगा या सुनेगा। इसकी वजह क्या है?

एक अद्भुत घटना

कुछ महीनों पहले मैंने अखबार में एक दिलचस्प लेख पढ़ा। उस लेख में इस सवाल का जवाब इतनी संजीदगी से दिया गया है जैसा मैंने पहले कभी नहीं पढ़ा-सुना। तुम्हें सिर्फ गूगल दादा को कहना है कि इन्द्रजीत हाज़रा का लेख "How Maradona gave boomers their collective 'Mexico Event'" निकालें। यह लेख *द टाइम्स ऑफ इंडिया* में 29 नवम्बर, 2020 को छपा था।

लेख 25 नवम्बर, 2020 को मैराडोना के निधन के बाद लिखा गया था। तुम लोगों ने शायद टीवी और इंटरनेट पर मैराडोना के खेल की महज़ कुछ ही क्लिप्स देखी होंगी। इसी वजह से मैं इस लेख पर कुछ बात करना चाहता हूँ ताकि तुम यह समझ सको कि अपने टीवी पर उस खास गोल को देख रहे लाखों लोगों ने उस वक्त कैसा महसूस किया होगा। और शायद तुम यह भी देख सको कि इतने साल बाद तुम उस गोल के बारे में कैसा महसूस करते हो, है ना?

इन्द्रजीत दा के लेख से कुछ लाइनें यहाँ पेश हैं:

"...डिएगो मैराडोना के उस ज़बरदस्त प्रदर्शन को देखें तो... वह हम में से ज़्यादातर लोगों के लिए पहली वैश्विक घटना थी जो हमने 'लाइव' देखी थी। हम लोग जुलाई 1969 में चाँद पर कदम रखने की इससे थोड़ी कम शानदार, मगर इतनी ही अद्भुत घटना देखने से तो चूक ही चुके थे। दूरदर्शन का प्रसारण असल में सीधा प्रसारण नहीं था। लेकिन टीवी से चिपके हम लोगों के लिए उसमें 'सीधे प्रसारण' का एक अहम पहलू तो था ही। क्योंकि हमें नहीं पता था कि अगले पल क्या होगा। 'मेक्सिको घटना' की महानता ने इस जुड़ाव को और भी बढ़ा दिया।

जून के आखिरी दिनों की रात को (हमारे लिए तो उस गोल के समय 23 जून हो चुका था) इंग्लैंड के खिलाफ पचपनवें मिनट में किए मैराडोना के गोल से जिस शिद्दत से 'वह होते हुए मैंने अपनी आँखों से देखा' वाला एहसास होता है,वह दूसरी किसी घटना से नहीं होता (उससे पहले वाले गोल से भी नहीं)। यहाँ तक कि 25 जून 1983 को लॉर्ड्स के मैदान में मोहिन्दर अमरनाथ ने जब माइकेल होल्डिंग को एलबीडब्ल्यू आउट किया... जिससे हिन्दुस्तान पहली बार वर्ल्ड चैम्पियन बना...उससे भी नहीं...।"

मैराडोना का जादू

लेकिन इन्द्रजीत दा हमसे कहते हैं कि 22 जून 1986 को एज्टेका स्टेडियम में मैराडोना ने लाखों हिन्दुस्तानियों को एक ज़बरदस्त एहसास दिलाया। जिस अन्दाज़ से वे पचपनवें मिनट में इंग्लिश टीम के गोलपोस्ट की तरफ गेंद के साथ किसी जादूगर की तरह करतब दिखाते हुए गए, उसने दर्शकों का दिल जीत लिया। बढ़ते ब्यूनस आयर्स की दरिद्र बस्तियों से आए भूरी चमड़ी और घुँघराले बालों वाले 25 साल के मैराडोना कुछ ही पलों में उन तमाम लोगों से जुड़ गए जो हज़ारों मील दूर स्थित महासागरों, समन्दरों और नदियों के किनारे बसे दूसरे मुल्कों के शहरों, कस्बों और गलियों में कहीं बैठे हुए थे।

और इसके बाद जो हुआ वह फुटबॉल के इतिहास में किंवदंति है।

लेख के अन्त में इन्द्रजीत दा ने इसके बारे में कुछ यूँ लिखा है:

"...बेशक, एक फुटबॉल खिलाड़ी के तौर पर मैराडोना की महानता महज़ 'मैक्सिको घटना' तक सीमित नहीं है। इसके चार दिन बाद ही उन्होंने बेल्जियम सुरक्षा घेरे को ध्वस्त करते हुए एक और शानदार गोल किया। लेकिन '22 जून, 1986' खास प्रशंसकों के लिए एक यादगार है। ये उत्पत्ति की वो कहानी है जो हमें/उन्हें एक ऐसी भूमण्डलीय घटना

से जोड़ती है जिसे उस समय के अपने टीवी सेट के ज़रूरी व उदास ब्यौरे के साथ बड़े प्यार व रूमानियत से याद किया जाता है।

दुनिया के सबसे बेहतरीन फुटबॉल खिलाड़ी होने के साथ-साथ मैराडोना वो महान टाइम मशीन भी हैं जिसने कुछ चुनिन्दा लोगों को (जिनकी गिनती लाखों में थी) देश-काल के 10 सेकेंड से कुछ ही ज़्यादा हिस्से में एक साथ ला दिया... अगर आपको लगता है कि वे लोग जो उस वक्त वहाँ नहीं थे बल्कि जिन्होंने उसकी महानता का 'सेकेंड हैंड' आस्वाद ही लिया है... हमारी मुस्कराती कृपापूर्ण सहानुभूति के हकदार हैं, तो उन वाकई दुर्भाग्यशाली लोगों के बारे में सोचिए जो 22-23 जून ,1986 को थे ही नहीं..."

मैं भी वहाँ था

वैसे तुम्हें पता है इन सब में सबसे मज़ेदार बात क्या है? हालाँकि मेरी उम्र उतनी नहीं है। लेकिन मैं भी वह मैच देखने के लिए मौजूद था! वैसे ईमानदारी से कहूँ तो उस मैच के दिन भी मेरी उम्र कुछ खास नहीं थी! एक महीने से बस थोड़ी ज़्यादा! हाँ, तुमने सच सुना – चार हफ्ते और कुछेक दिन। यही मेरी उम्र थी उस दिन।

मुझे पक्का यकीन है कि मैंने वह मैच अपनी माँ की गोद में बैठकर देखा होगा। उन बहुत ही पुराने दिनों में हमारे घर जो ब्लैक एंड व्हाइट टीवी हुआ करता था उसी के सामने बैठ मेरी माँ ने रोमांच और अविश्वास से भरी नज़रों से एक किंवदंति को जन्म लेते देखा होगा। पता नहीं उसने इस बात कर ध्यान दिया कि नहीं कि मैराडोना की चमड़ी का रंग भी भूरा था, ठीक हमारी तरह...

मुझे पक्का यकीन है कि उसने वह गोल होते हुए अपनी आँखों से देखा होगा (और उम्मीद है कि मैं उस वक्त माँ की गोद में था और जग रहा था!)। उस गोल का ज़िक्र हँस-हँसकर इतनी बार कर चुकी है कि गिनती नहीं, और मुझे नहीं लगता कि इतने समय से वह सिर्फ दिखावा ही कर रही थी!

जब मैराडोना का निधन हुआ तब माँ ने उस गोल का ज़िक्र किया। फर्क सिर्फ यह था कि इस बार, या यूँ कहें तो एक बार और, दुनिया भर में लाखों – बल्कि करोड़ों लोग उस गोल का ज़िक्र कर रहे थे। मगर इस बार वे सभी लोग दुखी थे। शायद उनका दिल टूटा हुआ था।

तुम्हें श्रद्धांजलि, एल डिएगो!

और आपको शुक्रिया, इन्द्रजीत दा।

माथापच्ची

1. नीचे दिए चित्र में लाल, पीला व नीला रंग इस तरह भरना है कि जुड़े हुए गोले एक ही रंग के ना हों। क्या तुम ऐसा करने के कम से कम तीन तरीके बता सकते हो?

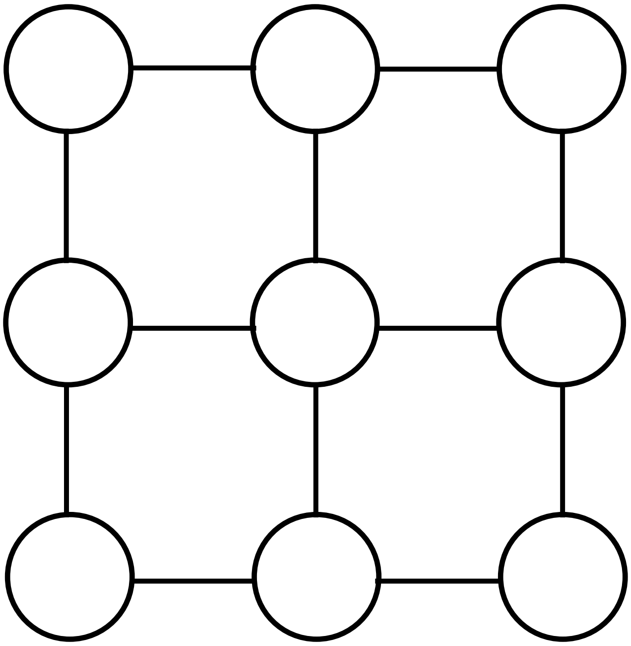

2.
चार दोस्त किराए के कमरे में साथ रहते हैं। एक दिन सैफ को कुछ पैसों की ज़रूरत पड़ी। उसने एटीएम से तीन हज़ार रुपए निकालकर मेज़ की दराज़ में रखे और कॉलेज चला गया। लौटने पर उसने देखा कि दराज़ से पैसे गायब हैं। उसने तीनों दोस्तों से पूछा कि उसके पैसे किसने लिए।

पहला दोस्त: मैं तो सुबह से कमरे से निकला, अभी वापिस आया हूँ। मुझे कुछ नहीं मालूम।

दूसरा दोस्त: मैं अपना मोबाइल भूल गया था। तो दराज़ से मोबाइल निकालकर तुरन्त ही वापिस चला गया था।

तीसरा दोस्त: मैं तो अभी वापिस आया हूँ। मुझे नहीं पता कि दराज़ से पैसे किसने निकाले।

इस बातचीत के आधार पर क्या तुम बता सकते हो कि सैफ के पैसे किसने लिए?

3. इस ग्रिड में भारत में बोली जाने वाली कुछ भाषाएँ और बोलियाँ हैं।

तुम इन्हें बाएँ-दाएँ, ऊपर-नीचे, और आड़े-तिरछे भी ढूँढ़ सकते हो।

को	मा	ह	का	ल	न	त	ख	मैं
पे	र	य	ना	सं	था	ली	हे	थि
सा	वा	स	ग	कु	मा	ऊ	नी	ली
चि	ड़ी	ह	पु	अ	ल	ह	घे	च
भो	ज	पु	री	न	व	ब	बु	का
म	ले	सू	ज़	जा	बृ	धी	न्दे	ल
नि	ग	च	ख़	ते	ज	का	ली	वी
ही	मा	ही	ग	ढ	वा	ली	ल	छी
ज़	ग	ड़ी	अ	लो	टी	मा	न	का

पेज 37 पर जारी...

पास्कल त्रिकोण

आलोका कन्हरे

आओ एक बड़े ही मज़ेदार त्रिकोण को देखते हैं। इसके लिए एक पंक्ति में 1 लिखो। इसे हम 0 पंक्ति कहेंगे। इसके बाद हम हरेक पंक्ति में 1 लिखेंगे। पर इसे पिछली बार लिखे 1 के दाईं व बाईं ओर थोड़ी दूरी पर लिखेंगे। इस तरह बने त्रिकोण को 'पास्कल त्रिकोण' कहा जाता है।

0 पंक्ति 1 | 1 | 1 | 1

1 पंक्ति 1 1 | 1 + 1 | 1 + 1

2 पंक्ति 1 1 | 1 + 2 + 1 | 1 + 2 + 1

3 पंक्ति 1 1 | 1 3 3 1 | 1 + 3 + 3 + 1

4 पंक्ति 1 ? ? ? 1

इस आसान-से त्रिकोण में कई दिलचस्प पैटर्न छिपे हैं। इनमें से कुछ को हम यहाँ देखते हैं।

1)

1 → $1 = 2^0$

1 1 → $1+1=2=2^1$

1 2 1 → $1+2+1+4=2^2$

1 3 3 1 → $1+3+3+1=8=2^3$

1 4 6 4 1 → $1+4+6+1=16=2^4$

2)

1 → $1 = 11^0$

1 1 → $11=11^1$

1 2 1 → $121=11^2$

1 3 3 1 → $1331=11^3$

1 4 6 4 1 → $14641=11^4$

1 5 10 10 5 1 → $?=11^5$

इस त्रिकोण में छिपी एक और मज़ेदार बात है

3)

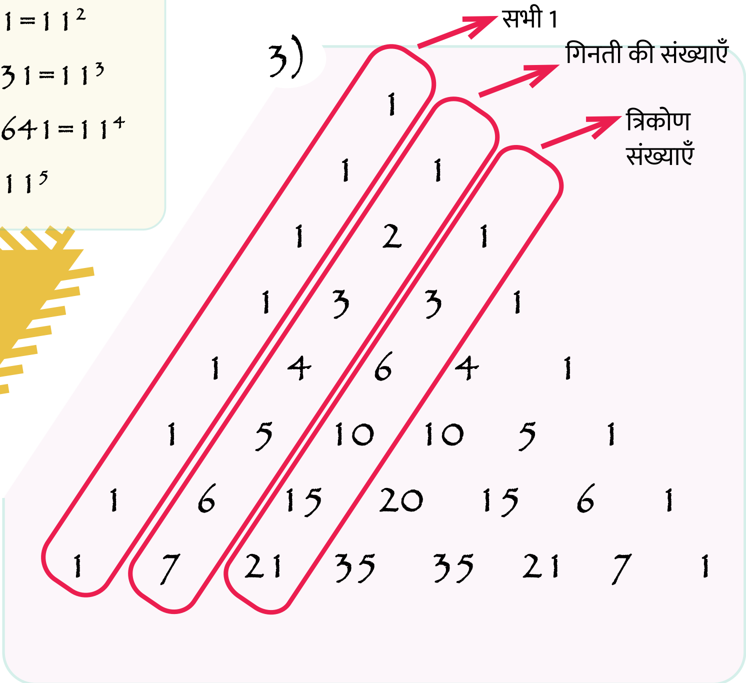

गणित है मज़ेदार!

इन पन्नों में हम कोशिश करेंगे कि आपको ऐसी चीज़ें दें जिनको हल करने में मज़ा आए। ये पन्ने खास उन लोगों के लिए हैं जिन्हें गणित से डर लगता है।

इन ‘त्रिकोण संख्याओं’ को थोड़ा ध्यान-से देखते हैं। 1, 3, 6, 10....

यदि हम मोतियों का उपयोग करके इन्हें जमाएँ तो? कुछ इस तरह...

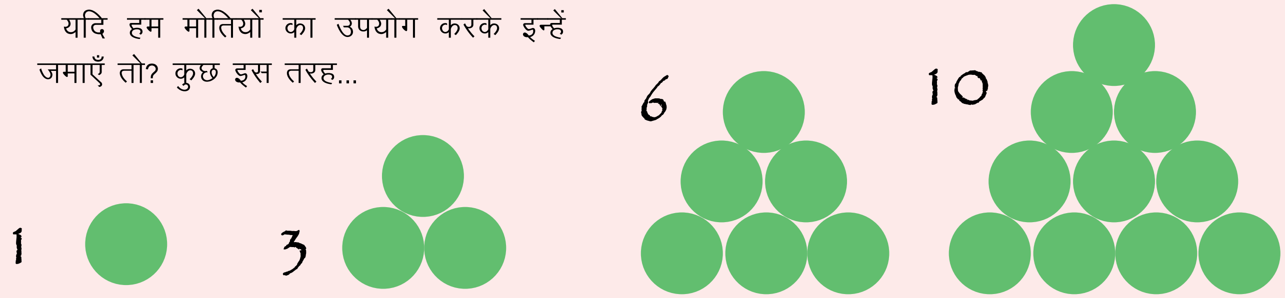

क्या तुम देख सकते हो कि इन्हें त्रिकोण संख्याएँ क्यों कहते हैं? पास्कल त्रिकोण को आगे बढ़ाते जाओ और देखो कि क्या यह पैटर्न आगे भी जारी रहता है।

त्रिकोण संख्याओं में और भी कुछ खास बात है। क्या तुम उसे देख पाए? हमें लिखना कि तुमने त्रिकोण संख्याओं में कौन-सी खास बात खोजी।

इस त्रिकोण में इसी तरह के कई और पैटर्नों को खोजने की कोशिश करो।

तुम्हें यह जानकर हैरानी होगी कि पास्कल से बहुत पहले भारत, ईरान और चीन जैसे देशों के कई गणितज्ञों ने इस त्रिकोण को खोज लिया था। भारतीय गणितज्ञ पिंगला ने तीसरी या दूसरी ईसा पूर्व के लगभग ‘मेरुप्रस्तार’ नाम की एक कविता लिखी थी। यह कविता कुछ इस तरह दिखती है:

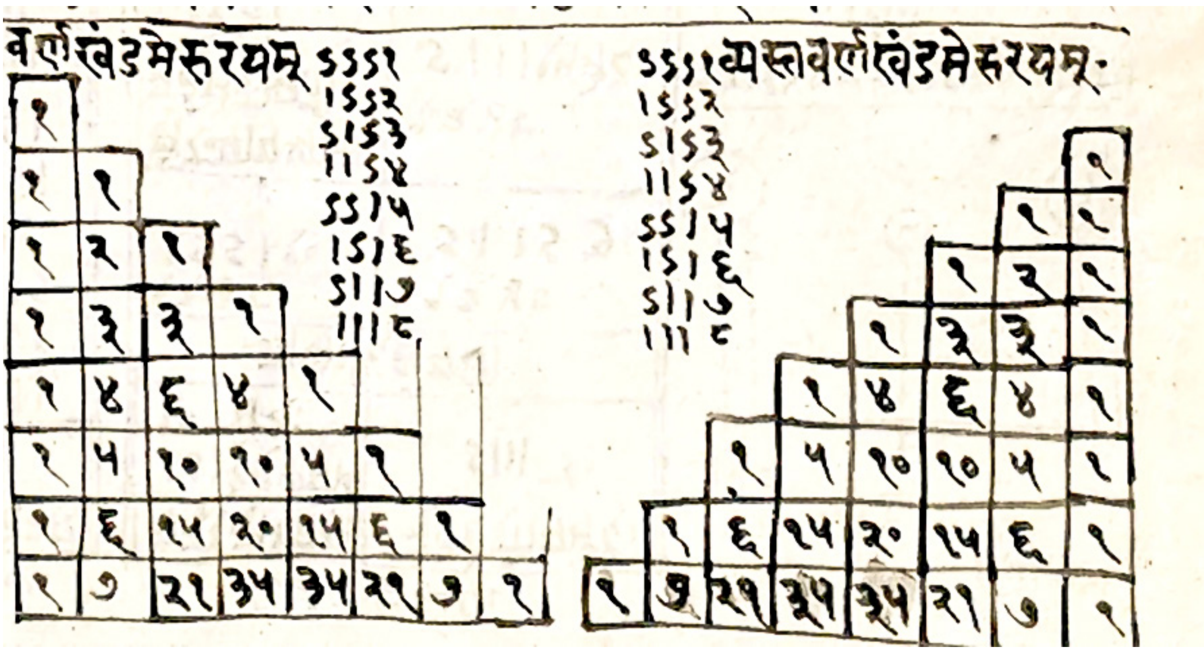

https://en.wikipedia.org/wiki/Pingala

क्या तुम इसमें पास्कल त्रिकोण को देख सकते हो?

पिंगला की ही तरह एक ईरानी कवि और खगोलविद-गणितज्ञ उमर खय्याम ने भी एक त्रिकोण खोजा था जो पास्कल त्रिकोण की तरह दिखता था। ईरान में अभी भी इस त्रिकोण को ‘खय्याम त्रिकोण’ ही कहा जाता है।

आँगन की गौरैया

अंशुमान मिश्रा
छठवीं, जवाहर विद्या मन्दिर, श्यामली, रांची, झारखण्ड

हमारे आँगन में एक गौरैया रहती थी। उसका घोंसला हमारे घर के ठीक सामने वाले पेड़ में था। एक दिन जब मैं ऑनलाइन क्लास कर रहा था तब गौरैया अपनी मधुर आवाज़ में चहचहा रही थी। क्लास के दौरान गौरैया की आवाज़ से परेशान होकर मैंने खिड़कियाँ बन्द कर दीं। यह कोरोना के कारण हुए प्रथम लॉकडाउन की घटना है।

फिर कुछ दिन बाद जब कोविड का प्रकोप कम हुआ तब पापा किसी से बात करते हुए कह रहे थे कि यह पेड़ पुराना और बूढ़ा हो गया है। अब यह फल-फूल देने में सक्षम नहीं है। इसलिए हम इसे काट देंगे। यह सुनते ही मैं मन ही मन खुश हुआ कि गोरैया से पीछा छूटेगा।

आज जब कोविड बढ़ने के कारण फिर से हम अपने घरों में बन्द हैं तब मैं बहुत अकेला महसूस करता हूँ। मुझे उस गौरैया की याद आती है। और मैं अपनी गलती के लिए पछताता हूँ। यही बात मुझे सोचने पर मजबूर करती है कि काश, वो गौरैया आँगन में वापस आए।

चित्र: हर्ष रावत, दस साल, मोटिवेशन - द लर्निंग सेंटर, नोएडा, उत्तर प्रदेश से प्राप्त

राम-राम बा!

सूरज रैगर

दसवीं, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, बमोर, टोंक, राजस्थान

रोज़ाना सोने से पहले मैं सोचता हूँ कि आज मैंने क्या-क्या किया। सबेरे जब मैं स्कूल जा रहा था तो रास्ते में एक चबूतरे पर एक दादी रोज़ाना की तरह सूरज की रोशनी में बैठी थीं। उसी समय अचानक मेरे मुँह से निकला, "राम-राम बा।" दादी बहुत ही मधुर आवाज़ व उत्साह में बोलीं, "राम-राम बेटा।"

ऐसा लगा जैसे कि वो इन्तज़ार ही कर रही थीं कि उनसे कोई बात करे। मेरा स्कूल का समय हो रहा था। इसलिए मैं मुस्कराकर आगे बढ़ गया। मैंने सोचा है कि अब मैं रोज़ाना दादी को नमस्ते ज़रूर करूँगा।

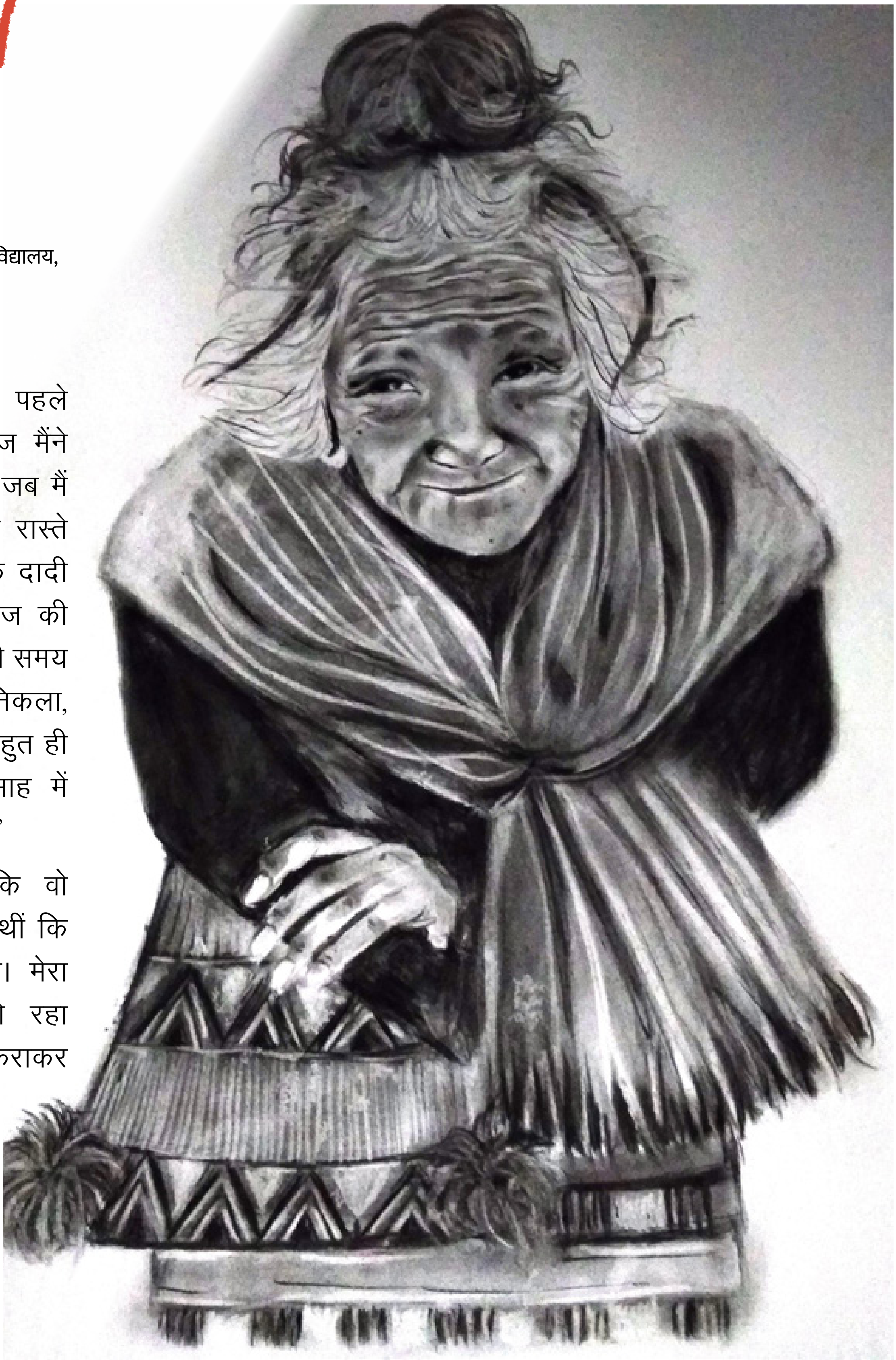

चित्र: बेहेलती अमा, बारहवीं, अपने लाइब्रेरी, वेकरो, अरुणाचल प्रदेश

लॉकडाउन में...

पूनम अहिरवार
आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला दिल्लौद, रुसल्ली

सबसे पहले पापा ने खेत जुतवाया। उसके बाद खेत में डालने के लिए कर्ज लेकर बीज लाए। उसके बाद पानी की ज़रूरत पड़ी। भगवान की कृपा से पानी भी ठीकठाक गिरा। अच्छा सोयाबीन हुआ। मगर अचानक सोयाबीन में कोई रोग लग गया। सोयाबीन पीला पड़ गया। इससे पापा को बहुत दुख हुआ।

पहले तो पापा ने खेत में बख्खर घिरवाने का सोचा। फिर पता नहीं उनके दिमाग में क्या सूझा कि उन्होंने सोयाबीन को कटवा दिया। मगर सोयाबीन कटने के बाद भी पानी गिर गया। दो-तीन दिन तक पानी बन्द ही नहीं हुआ। इस बीच मेरे मौसाजी के लड़के का देहान्त हो गया। पापा वहाँ चले गए। और इधर सोयाबीन सड़ गया।

पापा बहुत परेशान हैं। उनको कटाई के लगभग साढ़े छह हज़ार रुपए देने हैं। और बीज का कर्ज भी देना है। अब मण्डी भी बन्द है। वह खुलेगी तभी पापा सोयाबीन मण्डी ले जाकर बेचेंगे। और शायद ही उन रुपयों से कटाई के रुपए चुक पाएँ। पहले पापा लकड़ियाँ काटते थे। अब भी कहीं कोई लकड़ियाँ कटवाने के लिए बुलाता है तो पापा चले जाते हैं। हमारे घर में इस समय रुपयों की ज़रूरत है। मगर हम जैसे-तैसे गुज़ारा कर रहे हैं।

मेरा पन्ना

लॉकडाउन में चित्रकारी

चित्र व लेख: सौरभ चौरसिया,
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय धुसाह - प्रथम, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

लॉकडाउन चल रहा था। घर से कोई निकलता नहीं था। इसी समय हमारा टीवी खराब हो गया। घर में पड़े-पड़े मन ही नहीं लगता था। तब मैंने बहुत-से चित्र बनाए। और उन्हें अपने घर की सभी दीवारों पर चिपका दिया।

चित्र: बेहेलती अमा, बारहवीं, अपने लाइब्रेरी, वेकरो, अरुणाचल प्रदेश

चित्र: समृद्धि अनादकर, पाँच साल, इंडो किड्स एकेडमी, जयपुर, राजस्थान

मेरी नई चप्पल

गरिमा, नौवीं, शहीद स्कूल, बीरगाँव, छत्तीसगढ़

एक दिन बाज़ार की रात मम्मी बाज़ार से आईं। वो अपने लिए और मेरे लिए चप्पल लाईं। मम्मी की चप्पल तो अच्छी थीं। मेरी भी अच्छी थीं। पर मुझे पसन्द नहीं आईं। मैं बहुत उदास हो गई। मैं उदास थी तो मम्मी को मेरी उदासी पसन्द नहीं आई। वो बोलीं, "चल, चप्पल को वापस कर आते हैं।"

मैं बहुत खुश हो गई। रात के नौ बज गए थे। हम बाज़ार पहुँचे तो चप्पल वाले चले गए थे। मैं फिर से उदास हो गई। तो मम्मी बोलीं, "अगले बाज़ार चप्पल ले लेना।" मैं अगले बाज़ार तक अपने भाई के चप्पल से काम चलाई। उसकी चप्पल पहनती तो वो कहता, "तू मेरी चप्पल मत पहन।" मुझे उस दिन की याद आती जब वो मेरी चप्पल पहनकर बाथरूम जाता और अपनी चप्पल पहनकर खेलता। मुझे बहुत गुस्सा आता।

अगली बार जब बाज़ार का दिन हुआ तो मैं बहुत खुश थी कि आज मेरी चप्पल आ ही जाएगी। जब हम बाज़ार में गए तो बातों-बातों में चप्पल खरीदना भूल ही गए। घर आए तब मुझे याद आया। तो मैं मम्मी को बोली, "मम्मी मेरी चप्पल।" मम्मी ने कहा, "अब इस हफ्ते चप्पल नहीं खरीदेंगे। अब तुम्हें अगले हफ्ते तक इन्तज़ार करना होगा।" मैं उस रात बहुत गुस्से में थी और उदास भी। चप्पल के चक्कर में मैं उस रात खाना भी नहीं खाई।

फिर अगले हफ्ते बाज़ार गए तो मैं सबसे पहले चप्पल के बारे में याद करवाई। मम्मी बोलीं, "पहले सब्ज़ियाँ खरीद लें। फिर लास्ट में खरीद लूँगी।" जब हम चप्पल बिकने की जगह गए तो मैं बहुत कन्फ्यूज हो गई कि कौन-सी चप्पल लूँ। बहुत टाइम हो गया था तो मम्मी बोलीं, "लेना है तो ले, वरना चल।" तो मैं झट-से एक चप्पल उठा ली। जो चप्पल मैं उठाई थी वो बहुत अच्छी थी। घर जाकर मैंने अपने मन में कहा कि इस चप्पल को मैं रोज़ धोऊँगी। मैंने एक दिन धोया। दूसरे दिन धोया। तीसरे दिन से धोना बन्द कर दिया। फिर भी मैं खुश थी कि अब मुझे अपने भाई की चप्पल नहीं पहननी पड़ेगी।

मेरा पन्ना

चित्र: अलमिन, पाँचवीं, विश्वास स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

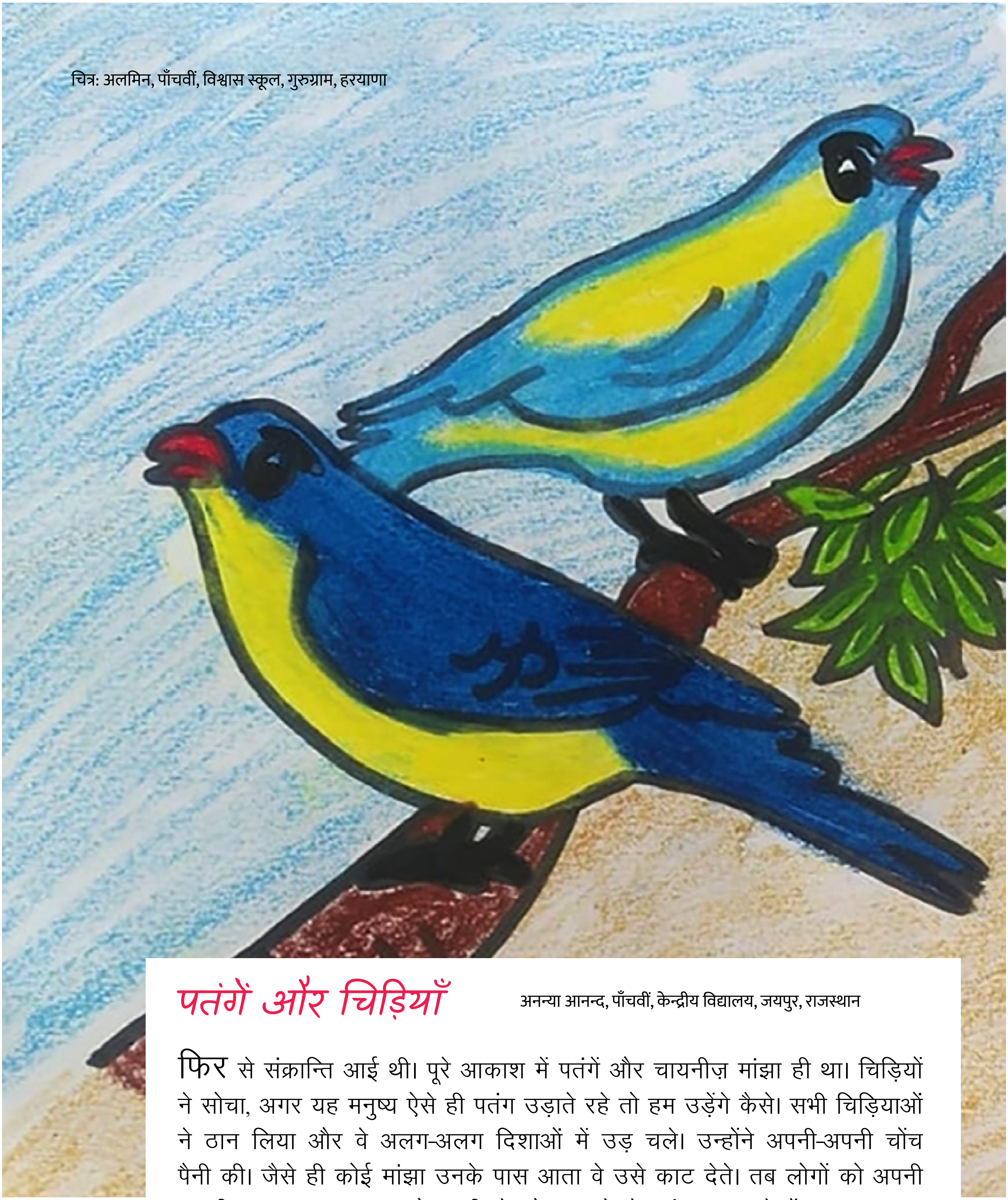

पतंगें और चिड़ियाँ

अनन्या आनन्द, पाँचवीं, केन्द्रीय विद्यालय, जयपुर, राजस्थान

फिर से संक्रान्ति आई थी। पूरे आकाश में पतंगें और चायनीज़ मांझा ही था। चिड़ियों ने सोचा, अगर यह मनुष्य ऐसे ही पतंग उड़ाते रहे तो हम उड़ेंगे कैसे। सभी चिड़ियाओं ने ठान लिया और वे अलग-अलग दिशाओं में उड़ चले। उन्होंने अपनी-अपनी चोंच पैनी की। जैसे ही कोई मांझा उनके पास आता वे उसे काट देते। तब लोगों को अपनी गलती का एहसास हुआ। और तभी से लोग सद्दे से पतंग उड़ा रहे हैं।

4. एक मेज़ पर समान माप के आठ कागज़ एक के ऊपर एक रखे हैं। उनके किनारों से बनने वाला पैटर्न तुम दिए गए चित्र में देख सकते हो। केवल सबसे ऊपर रखा कागज़ (नम्बर 1 वाला) ही पूरी तरह दिखाई देता है। क्या तुम बाकी कागज़ों को ऊपर से नीचे के क्रम में नम्बर दे सकते हो?

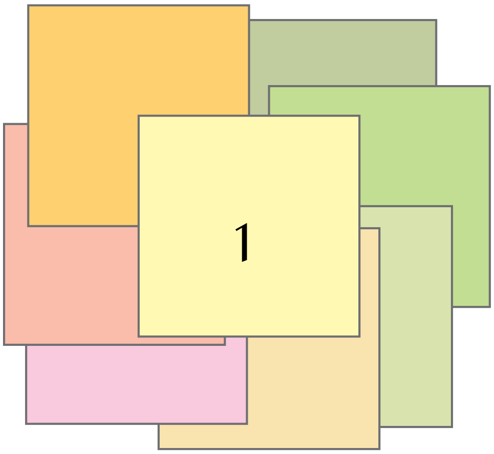

5. अगर डॉक्टर कहे कि इन तीन गोलियों को तुम्हें आधे-आधे घण्टे के अन्तराल में खाना है। तो गोलियाँ कितनी देर में खतम होंगी?

6. दिए गए क्रम में अगली संख्या क्या होगी?

1, 4, 9, 16, 25, 36, ...

7. सोहा और जिया के पास कुछ गुब्बारे थे। सोहा बोली, "अगर तुम अपने गुब्बारों में से एक गुब्बारा मुझे दे दो तो हम दोनों के पास बराबर गुब्बारे हो जाएँगे।" जिया बोली, "अगर तुम अपना एक गुब्बारा मुझे दे दो तो मेरे पास तुमसे दुगुने गुब्बारे हो जाएँगे।" बता सकते हो दोनों के पास कितने-कितने गुब्बारे थे?

8. पहली खाली जगह में जो शब्द तुम भरोगे, उसी को उलटा करके दूसरी जगह पर भरना है। जैसे कि शाम को कितने बजे आपकी जेब कटी थी।

- उसे हर चीज़ को _______ के खाने की _____पड़ गई है।
- मैंने कॉपी में तुम्हें अपना ______ लिखने के लिए ______किया था।
- जब भी उसका _______ दुखी होता है, तो उसकी आँखें _______ हो जाती हैं।
- वह उसके _____ पर चपत ______ कर चला गया।
- सारे काम _____ और एक ______ पानी ले आओ।

फटाफट बताओ

क्या है जिसे लोग अपने से
ज्यादा दूसरों का लेते हैं?

(माफ)

आग में जल जाए
तो क्या हो?

(।ाग्एाज ह्कु ाणाह कि ाखार िाल िाक् ाज)

गर्मी में जिससे घबराते
जाड़े में हम उसको खाते

(ण्गु)

बिना तेल के जलता है,
बिना पैर के चलता है
उजियारे का साथी है,
अँधेरा भी डरता है

(च्ग्रू)

बिन बुलाए रात में आएँ
सुबह-सुबह गायब हो जाएँ

(ग्रिा)

कोई व्यक्ति 30 दिनों तक
बिना सोए कैसे रह सकता है?

(ऽकाप्ति ंमि हाऽ)

माथापच्ची

तुम भी जानो

ऐसा भूकम्प जो 32 साल तक चला

आम तौर पर भूकम्प कुछ सैकेंड या मिनट के लिए ही आता है। इतने कम समय में भी इसकी तीव्रता तबाही की वजह बन सकती है। लेकिन कुछ भूकम्प लम्बे समय तक चलते हैं। 1861 में इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप में करीबन 8.5 तीव्रता का एक भूकम्प आया था। हाल ही में पता चला है कि यह पृथ्वी पर सबसे लम्बे समय तक चले भूकम्प का अन्त था। यह भूकम्प लगभग 32 सालों तक पृथ्वी के अन्दर चुपचाप चला था। जब पृथ्वी की सतह तक पहुँचा इसने तबाही मचा दी। एक भयानक सुनामी का कारण बना जिसने हज़ारों को मार डाला। इस तरह के भूकम्पों को 'धीमी गति की घटना' (स्लो स्लिप इवेंट्स) कहा जाता है।

कुत्ते करेंगे कोरोनावायरस की पहचान

कुत्तों की नाक इन्सानों की नाक से दस हज़ार गुना तक ज़्यादा संवेदनशील होती है। तो क्या कुत्तों की सूँघने की शक्ति का इस्तेमाल करके कोरोनावायरस का पता लगा सकते हैं? अमेरिका के शोधकर्ताओं की एक टीम ने गन्ध पहचानने वाले कुछ कुत्तों को प्रशिक्षित किया है। ये कुत्ते इन्सानों की लार और पेशाब को सूँघकर उसमें कोरोनावायरस के होने या ना होने का पता लगा सकते हैं। वैसे कुत्ते पसीने की गन्ध से मधुमेह, कुछ तरह के कैंसर और मलेरिया जैसी बीमारियों को पहचान पाने में सक्षम हैं। अगर कुत्ते पसीने की गन्ध से कोरोनावायरस का पता लगा पाते हैं तो रेलवे स्टेशन और हवाई अड्डों जैसी जगहों पर कोरोना से संक्रमित लोगों की पहचान करना आसान हो जाएगा।

	1		2		3		4	
5		6			7			
				8			9	
						10		
	11		12			13		14
	15							
16			17	18			19	
		20					21	
22				23				

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे

चित्र पहेली

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है न? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए न जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा न आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

9			8		1			5
			5					2
5				6	3		4	
	5	3		1	2	4	7	6
	6	9		3				1
								3
	2	8		5		6	9	7
7	3	4		9	6		5	8
	9	5		7	8		1	4

सुडोकू 44

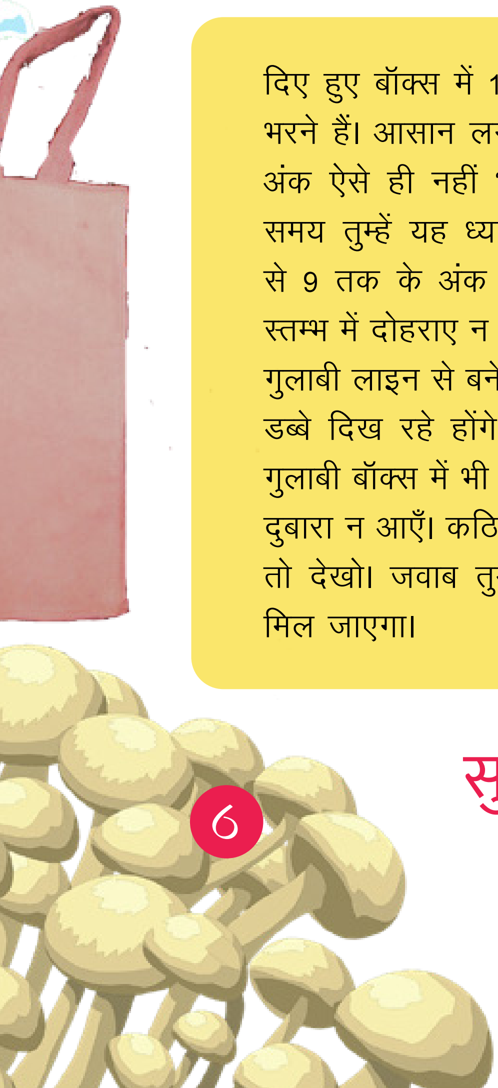

माथापच्ची जवाब

1. ऐसा करने के 9 तरीके हो सकते हैं। 3 यहाँ दिए गए हैं।

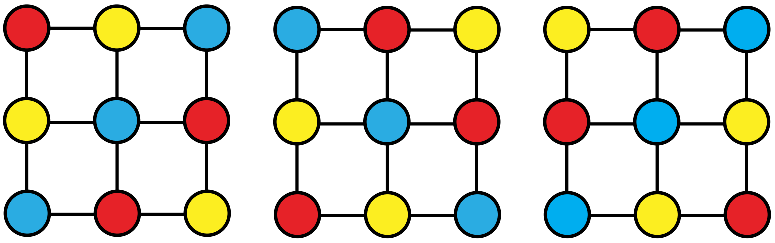

2. तीसरे दोस्त ने। क्योंकि सैफ ने तो इस बात का ज़िक्र किया ही नहीं था कि पैसे कहाँ रखे थे। तो फिर तीसरे दोस्त को कैसे मालूम हुआ कि पैसे दराज़ से गायब हुए।

3.

को	मा	ह	का	ल	न	त	ख	में
पे	र	य	ना	सं	था	ली	हे	थि
सा	वा	स	ग	कु	मा	ऊँ	नी	ली
चि	ड़ी	ह	पु	अ	ल	ह	घे	च
भो	ज	पु	री	न	व	ब	बु	का
म	ले	सू	ज़	जा	बृ	धी	न्दे	ल
नि	ग	च	ख	ते	ज	का	ली	वी
ही	मा	ही	ग	ढ़	वा	ली	ल	छी
ज़	ग	ड़ी	अ	लो	टी	मा	न	का

4. 1 नम्बर वाले कागज़ के ठीक नीचे सिर्फ ऊपर के बाएँ कोने पर दिया गया कागज़ ही हो सकता है। और बाकी के कागज़ों का क्रम भी घड़ी की विपरीत दिशा में है। कुछ इस तरह:

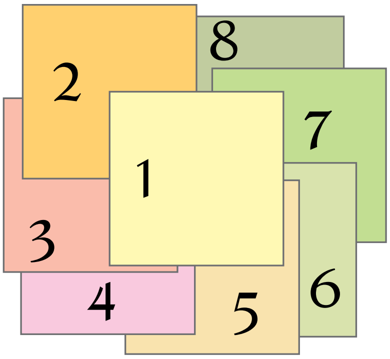

5. 1 घण्टे में।

6. इन संख्याओं में यह पैटर्न है:
$1^2 = 1$, $2^2 = 4$, $3^2 = 9$, $4^2 = 16$......
इसलिए, खाली जगह में $7^2 = 49$ आएगा।

7. सोहा के पास 5 और जिया के पास 7 गुब्बारे थे।

8. उसे हर चीज़ को तल के खाने की लत पड़ गई है।
मैंने कॉपी में तुम्हें अपना नाम लिखने के लिए मना किया था।
जब भी उसका मन दुखी होता है, तो उसकी आँखें नम हो जाती हैं|
वह उसके गाल पर चपत लगा कर चला गया।
सारे काम टालो और एक लोटा पानी ले आओ।

जून की चित्रपहेली का जवाब

1 डा	य	2 री			3 मे		4 पु	र्जा
य		5 ल	ड़ी		6 म	हु	आ	
7 ना	8 का			9 नै	ना		10 ल	11 ता
12 सो	न	चि	13 रै	या		14 अ		री
र			कि			15 सु	रा	ख
	16 क	17 पा	ट		18 जा	र		
19 कै		य		20 ति	ल		21 बो	ई
र		22 दा	ला	न		23 धा	रा	
24 म	का	न		25 का	र्टू	न		

सुडोकू-43 का जवाब

2	7	8	4	1	5	9	3	6
1	6	9	2	3	8	7	4	5
3	5	4	7	9	6	2	1	8
8	4	5	9	6	7	3	2	1
9	2	3	8	5	1	6	7	4
6	1	7	3	4	2	8	5	9
7	9	2	1	8	4	5	6	3
4	3	6	5	2	9	1	8	7
5	8	1	6	7	3	4	9	2

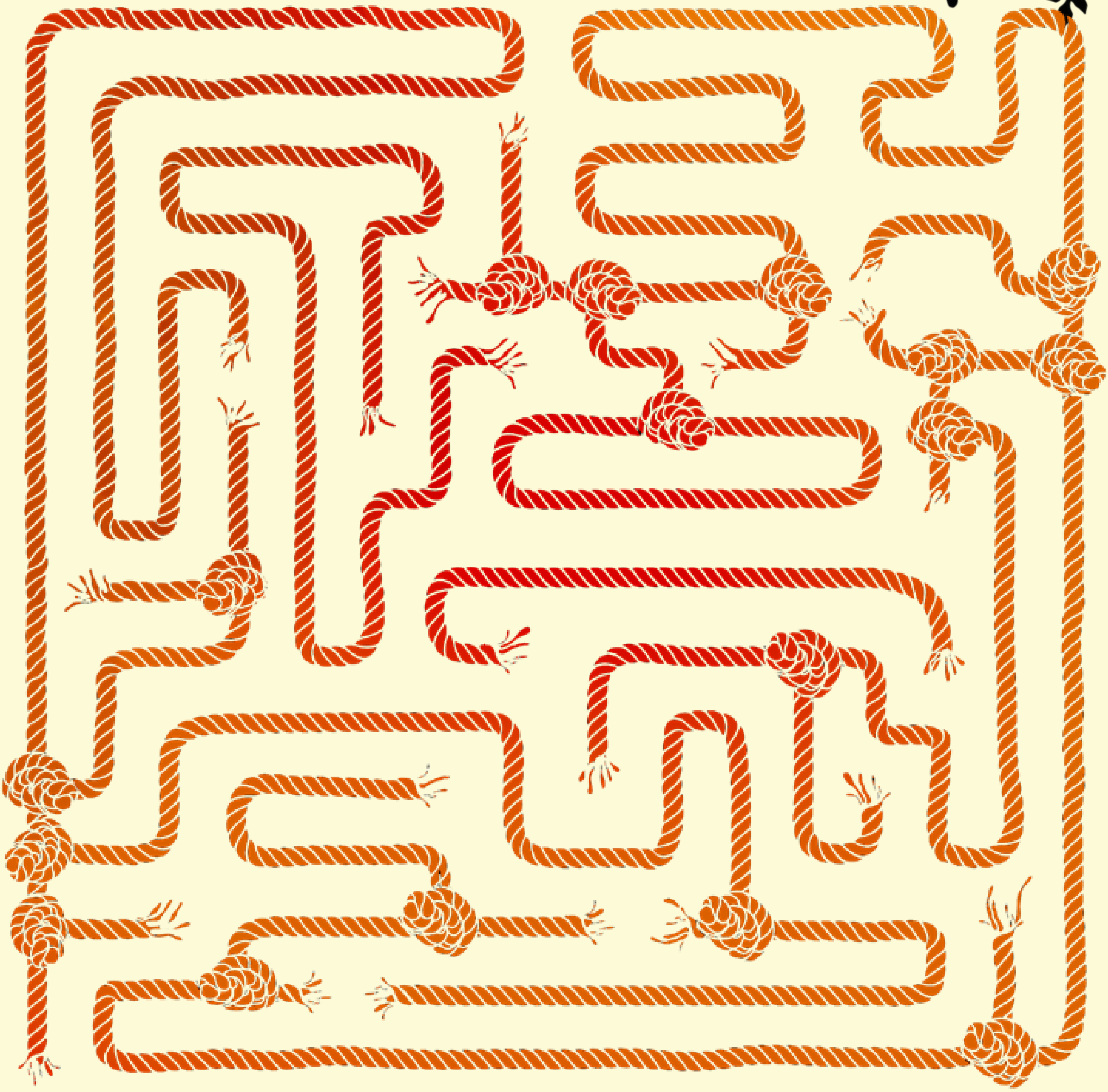

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

...मैंने एकलव्य की इस पत्रिका के लिए चकमक नाम सुझाया। ...चकमक की चिंगारी तो क्षण भर में ही बुझ जाती है। पर इस चिंगारी को तमाम लोगों ने एक लम्बे अर्से तक ज़िन्दा रखा है। चकमक पास हो तो तुम दुबारा चिंगारी पैदा कर सकते हो। अँधेरा चाहे कितना ही गहरा हो फिर भी चकमक से तुम्हें मंज़िल तक पहुँचने में मदद ज़रूर मिलेगी।

पद्मश्री अरविन्द गुप्ता, वैज्ञानिक व टॉयमेकर

चकमक सदस्यता (सब्सक्रिप्शन) खुद के लिए लें, बच्चों के लिए लें, जन्मदिन के उपहार में दें, स्कूलों, पुस्तकालयों, बच्चों के साथ काम कर रही संस्थाओं को दें...

दोस्तो,

पिछले कुछ समय से कुछ पाठकों से *चकमक* की प्रतियाँ ना मिलने या देर से मिलने की शिकायतें आ रही थीं। मालूम होता है कि साधारण डाक से सभी पाठकों को *चकमक* की प्रति समय से नहीं मिल पा रही है। इसलिए जुलाई अंक से नए सदस्यों को *चकमक* **रजिस्टर्ड डाक** द्वारा भेजी जाएगी। इसके चलते *चकमक* की सदस्यता शुल्क की नई दरें इस प्रकार होंगी:

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

यदि पुराने पाठक भी (जिन्हें *चकमक* नहीं मिल रही हो या समय पर उन तक नहीं पहुँच रही हो) रजिस्टर्ड डाक से *चकमक* मँगवाना चाहें तो वे chakmak@eklvaya.in पर ईमेल करें अथवा 9074767948 पर सम्पर्क करें।

नोट: रजिस्टर्ड पोस्ट की कीमतों में बदलाव होने पर सदस्यता दरों में भी बदलाव सम्भव है।

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन